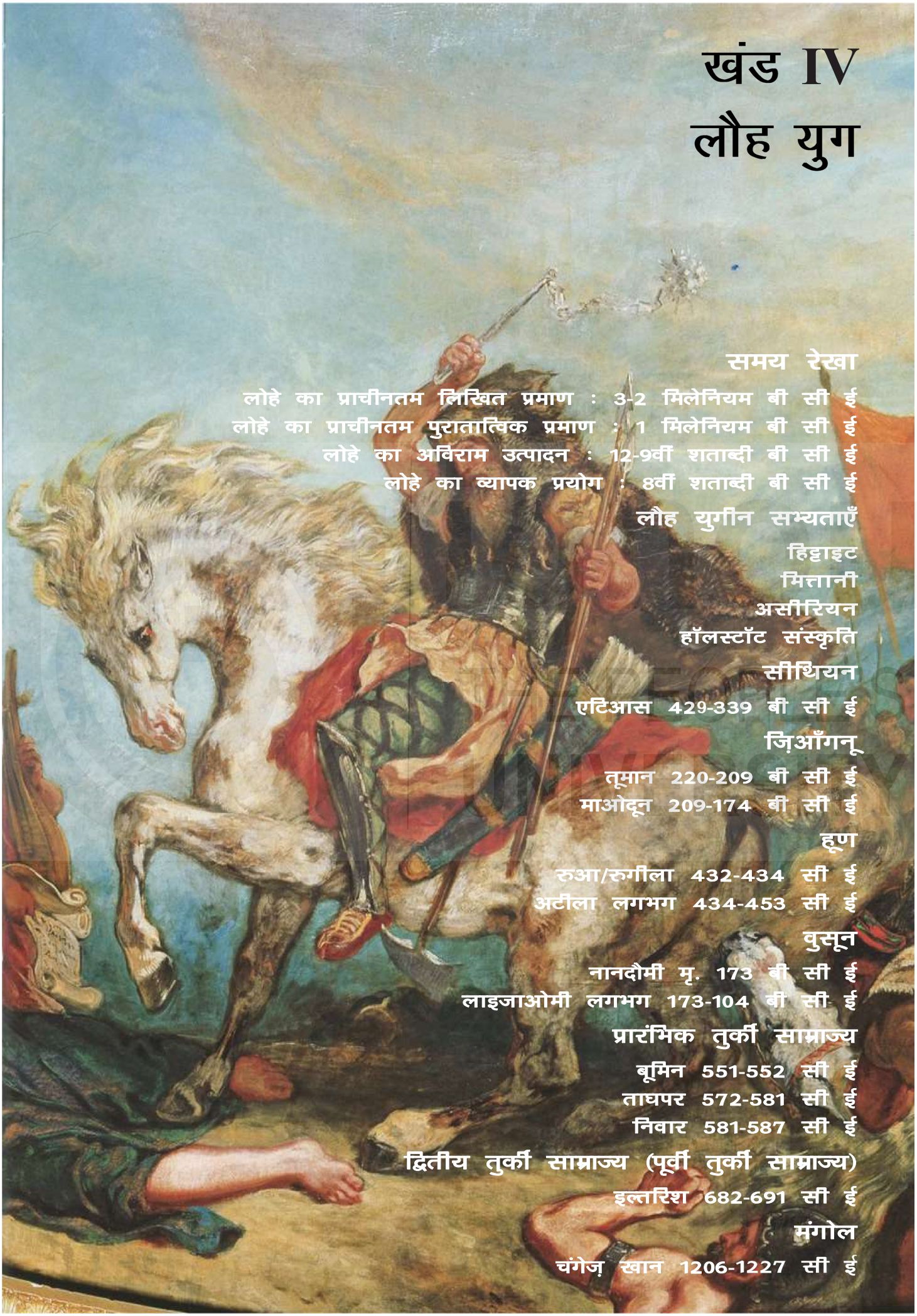

खंड IV
लौह युग

समय रेखा

लोहे का प्राचीनतम लिखित प्रमाण : 3-2 मिलेनियम बी सी ई
लोहे का प्राचीनतम पुरातात्विक प्रमाण : 1 मिलेनियम बी सी ई
लोहे का अविराम उत्पादन : 12-9वीं शताब्दी बी सी ई
लोहे का व्यापक प्रयोग : 8वीं शताब्दी बी सी ई

लौह युगीन सभ्यताएँ

हिट्टाइट
मित्तानी
असीरियन
हॉलस्टॉट संस्कृति
सीथियन

एटिआस 429-339 बी सी ई

ज़िआँगनू

तूमान 220-209 बी सी ई
माओदून 209-174 बी सी ई

हूण

रुआ/रुगीला 432-434 सी ई
अटीला लगभग 434-453 सी ई

वुसून

नानदौमी मृ. 173 बी सी ई
लाइजाओमी लगभग 173-104 बी सी ई

प्रारंभिक तुर्की साम्राज्य

बूमिन 551-552 सी ई
ताघपर 572-581 सी ई
निवार 581-587 सी ई

द्वितीय तुर्की साम्राज्य (पूर्वी तुर्की साम्राज्य)

इल्तरिश 682-691 सी ई

मंगोल

चंगेज़ खान 1206-1227 सी ई

चित्रांकनः अटीला और उसकी लश्कर का इटली पर हमला

फोटोग्राफः इयूजीन डेलाक्रॉइक्स (1798-1863)

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/1/14/Eugene_Ferdinand_Victor_Delacroix_Attila_fragment.jpg

इकाई 10 लोहे का प्रयोग और उसके निहितार्थ प्रभाव*

इकाई की रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 लोहे को पिघलाने की तकनीक

10.4 लोहे का आविर्भाव

10.4.1 साक्ष्यः लिखित और अभिलेखीय

10.4.2 पुरातात्विक साक्ष्य

10.5 लोहे का प्रसार और उसके प्रभाव

10.6 निकट पूर्व में लौह युग

10.7 यूरोप में लौह युग

10.8 सारांश

10.9 शब्दावली

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.11 संदर्भ ग्रंथ

10.12 शैक्षणिक वीडियो

10.1 उद्देश्य

इस इकाई में हम लोहे को पिघलाने की तकनीक की शुरुआत और लोहे का एक पंसदीदा धातु के रूप में चुनाव की शुरुआत के संबंध में पंद्रहवीं शताब्दी बी सी ई तक आये परिवर्तनों के बारे में जानेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- लोहे के आविर्भाव का विवरण दे सकेंगे,
- लोहे को पिघलाने के तरीकों को जान सकेंगे,
- विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में लोहे की शुरुआत के प्रारंम्भिक केन्द्रों को जान सकेंगे,
- सामाजिक निर्माण पर लोहे के प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, और
- लोहे के प्रयोग के शुरुआती तथा बाद के काल में प्रयोगों में अंतर कर पायेंगे।

10.2 प्रस्तावना

लौह युग की शुरुआत कांस्ययुगीन सभ्यताओं के पतन, युद्ध शैली में परिवर्तनों, घुमन्तू समूहों के उद्भव और व्यापारिक संबंधों के परिवर्तनों के साथ जुड़ी हुई है। लोहे के सर्वाधिक विशिष्ट प्रभावों में युद्ध के तरीकों में परिवर्तन, जैसे कवच, हथियारों के प्रकार तथा रथ के उपयोग के रूप में हैं। आठवीं तथा सातवीं शताब्दी बी सी ई से धीरे-धीरे लोहे का प्रयोग कृषि उपकरणों

* डॉ शतरूपा भट्टाचार्य, लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वीमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

में होने लगा जिसके कारण विशेष सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन आए। लोहे की कुदाल तथा हल के फाल लोहे की नई तकनीकियों के रूप में विकसित हुए। इसके प्रभावस्वरूप उन्नत उपज तथा सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए। कांस्य के विपरीत, जो कि एक विशिष्ट धातु थी, क्योंकि टिन और ताँबा दोनों ही आसानी से उपलब्ध नहीं थे, लोहे का **अयस्क (ore)** प्रचुर मात्रा में सभी क्षेत्रों में उपलब्ध था। इस प्रकार लोहे के दूरगामी प्रभाव पड़े जो कांस्य के प्रयोग में नहीं दिखाई देते।

कांस्य से लोहे का, एक पसंदीदा धातु के रूप में, प्रयोग को समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तनों के तौर पर देखा गया है, विशेषकर तकनीकी परिवर्तनों की दृष्टि से। जे.डी. मुहली (1985) एल. एच. मॉर्गन को उद्धरित करते हुए कहते हैं कि, मानव इतिहास में लोहे की तकनीकी का विकास उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि पशुपालन। कठोर और सस्ता होने के कारण लोहे का युद्धों में हथियार तथा कवच बनाने के लिए प्रयोग हुआ तथा बाद में कृषि उपकरण बनाने में भी इसका प्रयोग किया गया। लोहे के प्रयोग के साक्ष्य दूसरी सहस्राब्दी बी सी ई से ही मिलने लगते हैं जब इसके महत्व का पूरा ज्ञान भी नहीं था, लेकिन प्रमुख धातु के रूप में इसका विकास सातवीं शताब्दी बी सी ई से देखने को मिलता है। इस प्रकार बहुत ही कम समय में लोहा न सिर्फ तकनीकी बल्कि दूसरे परिवर्तनों को लाने में भी एक महत्वपूर्ण धातु के रूप में उभरा।

लोहे के प्रसार को इसकी बहुलता, संकर्षण (एक रसायन विधि जिसके द्वारा अयस्क से आक्सीजन तथा धातु को अलग किया जाता है) में आसानी और इसकी सापेक्षिक कठोरता के संदर्भ में देखा जाता है। ईआन मॉरिस (1989), वी. गॉर्डन चाइल्ड को उद्धरित करते हुये कहते हैं कि, सस्ते और सुलभ लोहे ने कृषि, उद्योगों और युद्ध को सुगम और सार्वलौकिक बनाया। कांस्य के विपरीत, जिसको अभिजात वर्ग के अलावा दूसरे वर्गों के लिये पाना बहुत कठिन था, लोहे की उपलब्धता सभी के लिये सुलभ थी तथा इसी वजह से इसने प्रारंभिक ऐतिहासिक परिवर्तनों को जन्म दिया।

लोहे के प्रारम्भिक साक्ष्यों में तलवार, ताबीज़ तथा अन्य दूसरे उत्पाद द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई से मिलते हैं। इस समय कांस्य युग तथा राजप्रसाद प्रथा (palatial system) का पतन भी हो रहा था। पी. विलार्ड (1996) का मानना है कि, कांस्ययुगीन शक्तियों का अंत लोहे के एक प्रमुख धातु के रूप में प्रयोग से जुड़ा हुआ है। उनका कहना है कि ऐसे राजनीतिक विकास का कारण नई तकनीकियाँ जैसे लोहे को पिघलाना आदि शामिल हैं जिन्होंने सैन्य क्षमताओं में परिवर्तन लाने में मुख्य भूमिका अदा की। मारिओ लिवरानी (1996) जैसे विद्वान कांस्य युग की अपेक्षा लौह युग में अधिक संख्या में बस्तियों के प्रसार को लोहे के एक लोकप्रिय धातु के रूप में अधिक प्रयोग के संदर्भ में देखते हैं। वे नये तरह के समाजों को जो घुमन्तू तथा अर्द्ध-घुमन्तू थे, जिन्होंने वैकल्पिक राजनीतिक समाज को जन्म दिया, जैसे पूर्वी भूमध्यसागरीय जो कि लोहे के प्रयोगों तथा इसकी उपलब्धता से जुड़े हुये हैं, को संदर्भित करती हैं। मैकनील (1985) के अनुसार (जे. डी. मुहली में उद्धरित) लोहे की भूमिका को एक उपयोगी धातु के रूप में समझा जा सकता है, जिसका कवच, शस्त्र आदि बनाने में उपयोग किया गया। इसे मध्य पूर्व में 1200-1000 बी सी ई में कबीलों के लगातार आक्रमणों के सिलसिलों तथा पलायनों के साथ जोड़कर भी देखा जाता है। लोहे के भण्डारों की उपलब्धता हर जगह होने के कारण, एक बार पिघलाने की विधि का पता चलने से इसका कांस्य की अपेक्षा अधिक मात्रा में उपयोग किया जाने लगा जो कांस्य के साथ संभव नहीं था। क्योंकि ताँबा तथा टिन जिनसे मिलकर कांस्य बनता था, एक विशिष्ट धातु थी, दोनों ही अयस्क कठिनता से उपलब्ध होते थे। एक तरह से, लोहे को पिघलाने की विधि तथा इसकी कठोर शक्ति ने परिवर्तनों को जन्म दिया जिसने एक बड़े समाज को प्रभावित किया क्योंकि इसका सैन्य शक्ति तथा दूसरी अन्य उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रयोग किया जा सकता था।

यह भी विचारणीय है कि तकनीकी परिवर्तन अकेले समाज में आये परिवर्तनों की व्याख्या नहीं कर सकते बल्कि समाज को इस तरह के परिवर्तनों के अनुकूल होना चाहिये। इस तरह परिवर्तनों में सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक के साथ-साथ मनुष्य भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिये आवश्यक है कि जब हम परिवर्तनों में लोहे की भूमिका की बात करें, तो हमें दूसरे संदर्भों जैसे – वातावरण, समाज तथा आर्थिक स्थितियों का भी ध्यान रखना चाहिये जिन्होंने उतना ही महत्वपूर्ण योगदान दिया।

10.3 लोहे को पिघलाने की तकनीक

लोहे को पिघलाना एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया है। हालाँकि धातु के साथ काम करने की विधि दुनिया के कई हिस्सों में छठवीं सहस्राब्दी बी सी ई से ही प्रयोग में थी। लेकिन लोहे के साथ काम करने के लिये अधिक तकनीकी श्रेष्ठता की आवश्यकता थी। लोहे की मानक विधि उसे पिघलाने की (लोहे का गलनांक बिंदु 1540 डिग्री सेल्सियस है जबकि तांबे का 1083 डिग्री सेल्सियस) है। उसके बाद लौह अयस्क को शुद्ध किया जाता है, जिसके लिये लौह भट्टियों में ऑक्सीजन का प्रवाह आवश्यक है। इसके साथ-साथ अपचयन (reduction) की स्थिति को भी बनाये रखना होता है जिससे आक्साइड अयस्क से ऑक्सीजन अलग होता है। इस प्रक्रिया में नियमित अंतरालों के बाद ईंधन की आवश्यकता होती है और नतीजन कार्बन मोनो आक्साइड कार्बन डाईआक्साइड पर हावी होती है।

ब्लूमरी (bloomery) प्रक्रिया में, जो पहले प्रयोग में थी, लोहे को पिघलाने वाले तापमान को प्राप्त करना तथा आवश्यक तापमान को बनाये रखना कठिन था। इस प्रक्रिया से अर्द्धठोस धातुमल (slag) को प्राप्त किया जाता था। इस धातुमल को दोबारा गर्म किया जाता था तथा पीटकर पिटवाँ लोहा (wrought iron) प्राप्त किया जाता था जिसका प्रयोग उपकरण बनाने में किया जाता था। इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया जाता था। इस कच्चे लोहे से सिल्ली, सलाखें तथा प्लेट इत्यादि बनाई जाती थीं। इस रूप में लोहे की लचीलापन शक्ति कांस्य के समान होती थी। कालांतर में लोहे को अधिक कठोर बनाने के लिये दूसरे तरीके भी विकसित किये गये।

एक तकनीकी जो स्टीलिंग आफ आयरन (steeling of iron) यानि कार्बुराइज़ेशन (carburization) कहलाती थी, यह एक ऐसी प्रक्रिया थी जिसमें ब्लूम सीधे चारकोल के सम्पर्क में होता है। इससे कार्बन लोहे में फैल जाता है, इस प्रकार आग इसे कार्बन-स्टील में परिवर्तित कर देती है। इस रूप में लोहा, स्टील की सूक्ष्म संरचना में होता है जो लोहे को और अधिक कठोर बनाता है। बारहवीं शताब्दी बी सी ई तक इस तकनीकी का पूर्वी भूमध्यसागर क्षेत्र में चाकू तथा ब्लेड आदि बनाने में सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया था।

क्वेंचिंग (quenching) के प्रयोग से लोहा और कठोर हो गया। क्वेंचिग प्रक्रिया में सामग्री को गरम करना तथा उसे तेजी से पानी, तेल या हवा में ठंडा करना होता है। क्वेंचिग तकनीकी में लोहे को कितनी तेजी से ठंडा किया गया है वह प्रमुख है। हालाँकि क्वेंचिग धातु को कमज़ोर भी बनाता है इसलिये **टैम्परिंग (tempering)** तकनीकी का प्रयोग किया गया। टैम्परिंग में लोहे को लचीला तथा अधिक कठोर बनाने के लिये फिर से गरम किया जाता है। एक तरह से इसे जरूरत के अनुसार आकार दिया जा सकता है। इस प्रक्रिया में चौथी शताब्दी बी सी ई तक श्रेष्ठता हासिल की गई।

सातवीं शताब्दी बी सी ई तक क्वेंचिग तथा **कार्बुराइजेशन** प्रक्रिया का उत्पादन में प्रयोग किया गया, जिसे स्टील कहा गया, जिसमें अधिक लचीलापन था। कठोर लोहे का कांस्य की तुलना में बेहतर हथियारों तथा उपकरणों को बनाने के लिये उपयोग किया गया।

विद्वानों का मानना है कि एक मानक प्रक्रिया के अलावा लोहे को पिघलाने की क्षेत्रीय विभिन्नतायें भी थीं, जो ताँबे को पिघलाने की परंपरागत विधियों से उत्पन्न हुई थीं। इसलिये लोहे को पिघलाने की विधि को तांबे को पिघलाने की उप-विधि के रूप में शुरुआत के साथ देखा जाता है। लोहे की कलाकृतियाँ कई कांस्ययुगीन सभ्यताओं से मिलती हैं, विशेषरूप से पूर्व भूमध्यसागरीय तथा दक्षिण पश्चिम एशिया से, जैसे मध्य तुर्की में अलाका हुयूक (Alaca Huyuk), 2500-2300 बी सी ई में। लोहा ट्रॉय (आधुनिक तुर्की में) में भी पाया जाता था जो कांस्ययुगीन कलाकृतियों से जुड़ा हुआ था। कांस्ययुग के दौरान लोहे को पिघलाने के सबूत, तकनीकी विशेषज्ञता तथा इस पर हिट्टियों के वर्चस्व की पूर्व धारणा को खारिज करते हैं, जिसे हम इस इकाई में बाद में पढ़ेंगे।

10.4 लोहे का आविर्भाव

विद्वान कांस्य से लोहे में बदलाव को समझने के लिये दो दृष्टिकोणों पर दृष्टिपात करते हैं। पहली परिसंचरण अवधारणा (circulation model) जिसके तहत विद्वानों का मानना है कि लंबी दूरी के व्यापार में कमी आने से कांस्ययुगीन सभ्यताओं का पतन हुआ जिससे कांस्य की कमी हुई तथा लोहे के प्रयोग तथा लोहे आधारित अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। दूसरी, जमाव की अवधारणा (deposition model) क्योंकि लोहा व्यापक रूप से उपलब्ध था अतः यह दैनिक उपयोग के लिये सबसे उपयुक्त धातु थी। जैसे ही लोहे को पिघलाने की विधि पर श्रेष्ठता हासिल हुई वैसे ही इसने एक पसंदीदा धातु का स्थान ले लिया।

पियरे विलार्ड (1996) लोहे के प्रयोग और प्रसार के तीन चरणों का उल्लेख करते हैं: प्रथम चरण में लोहे के उपकरण प्राप्त होते हैं लेकिन लौह तकनीकी ज्ञात नहीं थी। द्वितीय चरण में लोहे की गुणवत्ता को पहचाना गया (विशेष रूप से उपकरण और हथियार बनाने में) लेकिन कांस्य अभी भी उपयोग में था। और अंतिम चरण में अधिकांश उपकरण और हथियार लोहे के बने हुए थे लेकिन ताँबा अभी भी उपयोग में था। प्रारंभिक चरण में लोहे को सोने और चाँदी के समान मूल्यवान समझा गया। लेकिन बाद में इसकी प्रचुरता, उपलब्धता, पहुँच तथा तकनीकी ज्ञान ने लोहे की अपनी मूल्यवान स्थिति को खो दिया तथा यह एक रोजमर्रा की धातु बन गया।

याल्सीन (1999) का मानना है कि अनातोलिया में लोहे को पिघलाने की प्रक्रिया को चार चरणों में देखा जा सकता है। उनके द्वारा किया गया वर्गीकरण विलार्ड के समान है। पहले दो के अलावा वह तीसरे चरण को बारहवीं से नौवीं शताब्दी बी सी ई में रखते हैं, जब लोहे का नियमित उत्पादन शुरू हो गया, और लोहा प्रभावी धातु बन गया तथा इसका प्रयोग हथियार और उपकरण, आदि बनाने में किया जाने लगा। अंततः आठवीं शताब्दी बी सी ई से लोहे का दैनिक प्रयोग किया जाने लगा तथा लोहे के उपकरणों में कई गुना वृद्धि हुई।

वी. गॉर्डन चाइल्ड (1956) का मानना है कि लौह युग के आने के बाद सभ्यताओं का कांस्य युग की अपेक्षा बड़े क्षेत्रों में विस्तार हुआ। उनके अनुसार लोहे तथा वर्णमाला ने अभिजात वर्ग तथा आम आदमी के संबंधों में भी बदलाव किया। सस्ते लोहे के कारण आम आदमी अब अभिजात वर्ग पर निर्भर नहीं था तथा किसान अपने लोहे के औज़ारों से बेहतर तरीके से भूमि को साफ कर सकते थे। इस तरह लोहे ने अभिजातों की तुलना में किसानों की स्थिति में बदलाव को सम्भव किया। एक तरह से चाइल्ड ने तकनीकी के महत्व पर ज़ोर दिया क्योंकि इसके कारण दूरगामी परिवर्तन आये। एशिया तथा ग्रीस से शुरू होकर, एट्रूस्कन, एक इतावली संघ, के साथ सातवीं शताब्दी बी सी ई में इसका पश्चिम की तरफ प्रसार हुआ। तथा फोनेशियन, जो कि पूर्वी भूमध्यसागरीय सभ्यता थी, की तरफ पन्द्रहवी शताब्दी बी सी ई में प्रसार हुआ।

इस प्रकार लौह युग के आने के साथ इतिहास में हम एक नये युग में प्रवेश करते हैं, जो कांस्य युगीन साम्राज्यों से अलग था। हम एक नई राजनीतिक व्यवस्था, बस्तियों का विस्तार तथा तकनीकी में बदलाव देखते हैं।

10.4.1 साक्ष्यः लिखित और अभिलेखीय

दूसरी सहस्राब्दी बी सी ई में लोहा एक महत्वपूर्ण धातु के रूप में विकसित हुआ। इस अवधि में लोहे को मूल्यवान समझा गया तथा इसकी तुलना सोने तथा चाँदी से की गई। प्रारम्भिक ग्रन्थों में लोहे को राजतंत्र का प्रतीक माना गया। असीरियाई राजा शालमनेसर प्रथम (1274-1245 बी सी ई) ने अपने दस्तावेजों में उल्लेख किया है कि जब उसने असुर में एक मंदिर का निर्माण कराया तब उसने मूल्यावान पत्थरों, सोने, चाँदी, लोहे, टिन, तांबे, इत्यादि का दान किया। एक और असीरियाई शासक तिगल्थ पिलेसर प्रथम (1115-1077 बी सी ई) ने भी स्वयं को लोहे के हथियारों का मालिक होने पर गर्व के रूप में प्रस्तुत किया है। हिट्टी दस्तावेज भी लोहे का उल्लेख द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई में राजशाही धातु के रूप में करते हैं। राजा की तुलना कभी-कभी लोहे की कठोरता तथा मज़बूती से भी की जाती थी। इस तरह से लोहे को इस चरण में राजशाही धातु से जोड़ा जाता था तथा यह एक मूल्यवान धातु था।

लोहे तथा इसके उत्पादों के लिखित साक्ष्य द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई से मिलने लगते हैं। कुल्तेपी (आधुनिक तुर्की में एक प्राचीन व्यापारिक केन्द्र) में पाया गया प्रारम्भिक असीरियाई अभिलेख, जो कि द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई का है, इसमें सोने व चाँदी के बदले में तांबे की जगह अब लोहे से विनिमय किया जाता था। इस तरह लोहे को चाँदी से चालीस गुना मूल्यवान माना गया, जिसमें बाद में चलकर भारी परिवर्तन आया।

इन सभी विभिन्न साक्ष्यों में लोहे के लिये विभिन्न स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिये, प्रारंभिक कुल्तेपी साक्ष्य, जो कि द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई के हैं, में लोहे के लिये ***अमुतुम (amutum)*** शब्द का प्रयोग किया गया है जो कि अक्कादी भाषा का शब्द है, जबकि मेसोपोटामिया में ***कु.अन*** (KU.AN) शब्द का प्रयोग किया गया है। दूसरी तरफ हिट्टियों ने सुमेरियन शब्द ***अन.बर*** (AN.BAR) का प्रयोग अपने अभिलेखों में किया है। साक्ष्यों में प्रयोग किये गये ये शब्द शौर्य तथा शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1800 बी सी ई से लोहे की उपयोगिता को पहचाना गया तथा इसको हथियार बनाने के लिये पंसद किया गया और जल्दी ही इसके प्रयोग में कई गुना वृद्धि हुई।

इस अवधि के पुरातात्विक साक्ष्यों में बहुलता के साथ खंजर, तलवार के ब्लेड, चाकू इत्यादि लोहे के बने हुये पाये गये हैं। उदाहरण के लिये, 2800 बी सी ई से तुर्की के अलाका हुयूक (Alaca Huyuk) के एक शाही मकबरे से दूसरी मूल्यवान वस्तुओं जैसे सोने के सिर वाली कीलों इत्यादि के साथ छः लोहे के खंजरों को प्राप्त किया गया है। लोहे को युद्ध के दौरान प्राप्त होने वाली लूट तथा भेंट के रूप में भी उल्लेखित किया गया है। सम्वतः यह लोहा कच्ची सामग्री के रूप में था जिससे कोई भी वस्तु बनाई जा सकती थी। असीरियाई राजा तिकुल्ती निनूरता द्वितीय (890-884 बी सी ई) ने उल्लेख किया है कि उसे सौ खंजर भेंट स्वरूप प्रदान किये गये।

हमें लोहे के प्रयोग के लिखित साक्ष्य तीसरी-दूसरी सहस्राब्दी बी सी ई से मिलते हैं, जिससे हमें प्रारंम्भिक समाजों में लोहे के महत्व का पता चलता है। उनसे हमें यह भी पता चलता है कि लोहे का उल्लेख शाही अभिलेखों तथा दस्तावेजों में किये जाने से हमें इसके एक कीमती धातु होने का पता चलता है, जिसे एक मूल्यवान वस्तु के रूप में अपने पास रखा जा सकता था।

10.4.2 पुरातात्विक साक्ष्य

प्रारंभिक लौह वस्तुयें तथा उसके गौण उत्पाद आकस्मिक थे तथा लोहे को पिघलाने का ज्ञान तथा तकनीकी धीरे-धीरे विकसित हुई और उसमें कौशल प्राप्त किया गया। प्रथम सहस्राब्दी बी सी ई से एशिया में लोहे के हथियार तथा आठवीं शताब्दी बी सी ई से कृषि उपकरण जैसे कुदाल, हल की फाल, विश्व के कई हिस्सों से प्राप्त किए गए हैं।

लोहे का सबसे पुराना पुरातात्विक साक्ष्य लोहे का एक पिघलाया हुआ टुकड़ा है जो उत्तरी ईराक के समारा क्षेत्र से प्राप्त एक कब्र से, जो कि पाँचवी सहस्राब्दी बी सी ई की है, मिलता है। ईरान के तेपे-सियाक से लगभग 4600-4100 बी सी ई की लोहे की तीन गेंदें मिलती हैं। लोहे की ये गेंदें भारी तथा कठोर थीं तथा इनमें निकिल की मात्रा अधिक थी। ऐसा माना जाता है कि इनकी उत्पत्ति **उल्का** (छोटी चट्टान अथवा बाहय अंतरिक्ष से आई धातु की वस्तुयें) के रूप में या अयस्क पिघलाते समय आकस्मिक उप-उत्पादों के रूप में हुई।

अनातोलिया से 3000-2000 बी सी ई की लोहे की वस्तुयें मिलती हैं। मेसोपोटामिया से नौ वस्तुएं जिनमें पिघलाये गये लोहे के दो टूटे खंजर ब्लेड, दो खंडित औज़ार के टुकड़े जिनकी उत्पत्ति उल्का से मानी गयी है, तथा पाँच अज्ञात वस्तुयें मिली हैं। लेकिन, हाल के शोधों से पता चलता है कि दोनों, उल्का में मिला लोहा (उल्कापिंड में पायी जाने वाली धातु) तथा **स्थलीय लोहा** (लोहा जो पृथ्वी से मिलता है, जिसे टेल्यूरिक (Telluric) लोहा भी कहा जाता है) दोनों ही मूल रूप से एक सजावट और प्रतीकात्मक महत्व की एक कीमती धातु थी।

असीरिया से लोहे के साक्ष्य खोरसाबाद, निनेवेह, तथा निमरूद से मिलते हैं। इनमें मध्य नौवीं शताब्दी बी सी ई के लोहे के खंजर, पिन के सिरे, तलवारें, म्यान की मूठ, बाणों, भालों और बल्लयों की नोकें आदि प्रमुख हैं। सातवीं शताब्दी बी सी ई में प्राप्त लोहे के बने कवच भी असीरिया से मिलते हैं। इसके अतिरिक्त कुदाली की मूठ, कुल्हाड़ी, मुदाली, हल, चाकू, हंसिया, आरी, हथोड़ा इत्यादि निनेवेह, खोरसाबाद तथा अन्य दूसरी जगहों से मिले हैं। इस अवधि में लोहे से बनी ज़ंजीर (fetters) तथा लोहे के कलाई बंद (cuffs) का उल्लेख लिखित साक्ष्यों में मिलता है। खोरसाबाद में निर्माण कार्य में भी लोहे का प्रयोग किया गया। ज़ंजीरों का ढेर तथा दरवाजों के कुंदे बड़ी मात्रा में मिले हैं। बाद में यूनानियों तथा ईरानियों ने भी निर्माण कार्य में लोहे का प्रयोग किया।

बोध प्रश्न-1

1) प्राचीन विश्व में लोहे के प्रारम्भिक प्रयोग के क्या पुरातात्विक साक्ष्य मिलते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) लोहे को पिघलाने की तकनीकी का वर्णन कीजिए तथा लोहे को एक पसंदीदा धातु बनाने में इसका क्या योगदान था?

.....

.....

.....

.....

.....

10.5 लोहे का प्रसार तथा उसके प्रभाव

लोहे की तकनीकी तथा वर्णमाला लेखन का विकास काँस्ययुगीन सभ्यताओं के अंत तक हो चुका था। जे. डी. मुहली (1985) ने मैकनील को उद्धरित करते हुये कहा है कि मध्य पूर्व में लोहे के विस्तार ने 1200-1000 बी सी ई में नये आक्रमणों की लहर तथा पलायनों को जन्म दिया। नये लोग ऐतिहासिक दस्तावेज़ों में दर्ज किये गये जिन्होंने बर्बर तथा अपेक्षाकृत अधिक समतावादी युग की शुरुआत की। हिट्टियों की सैन्य सफलता में लोहे के हथियारों का प्रयोग सफलता का एक मुख्य कारण माना जाता है। इस संदर्भ में विशेष रूप से 1285 बी सी ई में क़ादेश की लड़ाई, मिश्र के फिरौन रैमसेस द्वितीय के साथ हुई हिट्टियों की लड़ाई, तथा उसके बाद दोनों राज्यों के मध्य शांति वार्तायें, अर्थात् 1269 बी सी ई की क़ादेश की संधि आदि का विशिष्ट रूप से वर्णन किया जा सकता है।

जैसा कि आप अगली **इकाई 11** में पढेंगे कि द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई से घुमंतू समूहों ने कांस्य युगीन साम्राज्यों का अन्त किया, जिसने सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर बड़े बदलावों को जन्म दिया। इस समय पूर्व में असीरियन साम्राज्य का विस्तार हुआ (आप असीरियन साम्राज्य की विस्तार से चर्चा **इकाई 12** में पढ़ेंगे)। असीरियन एक सैन्य शक्ति थे और वह लोहे के प्रयोग के लिये जाने जाते थे क्योंकि वे लोहे के भण्डारों, जैसे कि टॉरस पहाड़ों, के निकट स्थित थे। साक्ष्य पुष्टि करते हैं कि इनके द्वारा लोहे का प्रयोग हथियार बनाने के लिये किया गया। कुछ विद्वानों का मानना है कि व्यापार में व्यवधान पैदा होने के कारण तांबे की कमी हुई जिससे लोहे के प्रयोग का प्रचलन बढ़ा। जैसा कि 'लौह पत्र' (इसका विस्तृत वर्णन **भाग 10.7** में किया गया है) प्रमाणित करता है कि प्राचीन विश्व में लोहा वाणिज्यिक संबंधों के लिये एक प्रमुख वस्तु था।

धीरे-धीरे छठवीं शताब्दी बी सी ई से लोहे का प्रयोग सिर्फ हथियार ही नहीं बल्कि कृषि उपकरण जैसे कुदाल, हल की फाल, कुल्हाड़ी आदि बनाने में भी किया गया। लोहे के उपकरणों के प्रयोग ने कृषि में बड़े स्तर के परिवर्तनों को जन्म दिया जिनमें से उत्पादन में वृद्धि प्रमुख है। इस प्रकार पत्थर तथा लकड़ी के उपकरणों को किसानों ने धातु के उपकरणों से बदला जो मज़बूत तथा टिकाऊ थे। इसलिये लोहे को एक लोकतांत्रिक धातु के रूप में वर्णित किया गया है। लेकिन इस तरह के बदलाव बाद में हुए और इन पर चर्चा पाठ्यक्रम में आगे की जाएगी।

प्रथम सहस्राब्दी बी सी ई से लोहे ने अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख भूमिका अदा की जिनमें लोहे से बने बेहतर उपकरण, क्षेत्रीय विस्तार इत्यादि शामिल हैं। लोहे के प्रयोग के निहितार्थ प्रभाव व्यापक थे जिनकी चर्चा आगे की गई है।

सैन्य शक्ति तथा लोहे की भूमिका

लोहे ने युद्ध में बड़े परिवर्तनों को जन्म दिया क्योंकि यह कांस्य की तुलना में अधिक मज़बूत था (जैसा कि **भाग 10.3** में चर्चा की गई है)। उभरते राज्यों जैसे कि असीरिया, हिट्टाइट तथा मित्तानी को युद्ध में प्रयुक्त किए जाने वाले लोहे के हथियारों की बखूबी जानकारी थी। चूंकि इन सभ्यताओं ने दूसरी धातुओं की तुलना में लोहे की सापेक्ष उपयोगिता की खोज की, इसके द्वारा वह अपने कवचों तथा हथियारों में परिवर्तन लाए।

इन नये राज्यों ने लोहे के बने कवचों तथा हेल्मेटों के अतिरिक्त तलवारों, कटारों, भालों की नोकों आदि का प्रयोग कर अपनी सैन्य शक्ति की श्रेष्ठता का दावा पेश किया। पी. विलार्ड (1996) के अनुसार लोहे की माँग में वृद्धि, जिसे हथियार तथा उपकरण बनाने के लिये असीरियाइयों ने प्रयोग किया, ने लोहे के प्रयोग और लोकप्रियता को बढ़ाया। इन साम्राज्यों का सत्ता के केन्द्र के रूप में विकसित होने के पीछे यह भी एक कारण था। ये तीन राज्य निकट पूर्व में सत्ता के प्रमुख दावेदार थे तथा इनको प्रथम सहस्राब्दी बी सी ई में लोहे के हथियार तथा उपकरण बनाने में सर्वोच्च दक्षता प्राप्त थी।

इस काल में एक अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तन युद्ध में घोड़ों का प्रयोग था। घोड़ों को निकट पूर्व में द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई में पालतू बनाया गया तथा धीरे-धीरे युद्ध में इनकी उपयोगिता को पहचाना गया। युद्ध में नई तकनीकी के प्रयोग के अलावा, इसके कारण युद्ध में एक नए योद्धा वर्ग द्वारा रथों तथा घोड़ों का प्रयोग किया गया। ठोस पहिये वाले रथों का पहले सुमेरियाई लोगों ने प्रयोग किया लेकिन आरा वाले पहियों को जिन्हें घोड़े खींचते थे प्रथम सहस्राब्दी बी सी ई में प्रयोग में लाया गया।

रथ तथा घोड़े पर सवार समूहों का इन राज्यों की सफलता में प्रमुख योगदान था। लोहे के हथियारों के प्रयोग के साथ-साथ इनका हिट्टी तथा मित्तानी सैन्य दक्षताओं पर भी प्रभाव पड़ा। इन नई सैन्य तकनीकों का प्रसार दूसरे क्षेत्रों में भी तेज़ी से हुआ तथा ये सैन्य श्रेष्ठता का प्रतीक बन गईं।

कृषि में लोहे का प्रयोग सातवीं शताब्दी बी सी ई से देखा गया जिस काल की लोहे की फाल मेसोपोटामिया से प्राप्त हुई है। सेन्नाचेरिब (लगभग 704-681 बी सी ई) उल्लेख करता है कि लोहे के औज़ारों का प्रयोग पहाड़ों को काटकर नहरें बनाने के लिये किया गया जिससे निनेवेह क्षेत्र में सिचांई के लिये पानी लाया जा सके (विलार्ड, 1996)।

10.6 निकट पूर्व में लौह युग

लंबे समय तक विद्धानों का मानना था कि लोहे को पिघलाने की प्रक्रिया का विकास सर्वप्रथम, हिट्टियों ने किया, और उनके पतन के बाद ही इसका प्रसार निकट पूर्व के दूसरे हिस्सों तथा बाद में पश्चिम में हुआ। लिखित तथा अभिलेखीय साक्ष्यों को इसके संदर्भ में प्रस्तुत किया गया। लोहे के साक्ष्य द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई से मिलते हैं तथा प्रथम सहस्राब्दी बी सी ई से इसका व्यापक प्रयोग होने लगा। भूगर्भीय संरचना के अनुसार काला सागर के आसपास रेत में प्रचुर मात्रा में हैमेटाइट पाया जाता है। जैसा कि पियरे विलार्ड वर्णन करता है (1996) कि, स्ट्रैबो जैसे प्रारंभिक यूनानी विद्धानों का विश्वास था कि इसी क्षेत्र में लोहे की खोज हुई। लोहे के खनन के इस क्षेत्र से द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई में साक्ष्य मिलते हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या लोहे को पिघलाने की तकनीकी का प्रसार निकट पूर्व से विश्व के दूसरे हिस्सों में हुआ। इसलिये हमें इस क्षेत्र के साक्ष्यों को अध्ययन करने की जरूरत है जिससे लोहे की तकनीकी के विकास को समझा जा सके। हम हिट्टियों, मित्तानियों तथा असीरियाईओं के द्वारा लोहे के प्रयोग तथा उसके प्रसार पर दृष्टिपात करेंगे।

हिट्टी-मित्तानी और असीरियन

लगभग दो सौ हिट्टी दस्तावेज लोहे का उल्लेख करते हैं। इसके आधार पर विद्धानों का मानना है कि हिट्टियों ने बड़ी मात्रा में लोहे की बनी वस्तुओं का उत्पादन किया। हिट्टी शासक का एक पत्र (संभवतः हट्टुसिलिस तृतीय [1282-1250 बी सी ई]), जो असीरियाई राजकुमार को लिखा गया था, जिसे 'लौह पत्र' के रूप में जाना जाता है, भी हिट्टियों की लोहे के ऊपर दक्षता का उल्लेख करता है। जैसा कि पत्र में उल्लिखित है कि यह सिर्फ लोहे की एक धातु

की बात नहीं करता, बल्कि एक 'अच्छे लोहे' की बात करता है (माना जाता है कि यह स्टील को इंगित करता है)। यह उनके तकनीकी ज्ञान तथा लोहे की एक कठोर धातु के रूप में उपयोग को भी इंगित करता है। अनातोलिया क्षेत्र में पाया जाने वाला लोहा हिट्टियों की लौह उत्पादन क्षमता की पुष्टि करता है।

विद्वान हिट्टी वर्चस्व के संदर्भ में 'लौह पत्र' का उल्लेख करते हैं जिसमें हिट्टी राजा, जो उस समय 'अच्छे लौह' को उपलब्ध कराने में असमर्थ था, का उल्लेख है। इस पत्र का प्रयोग यह सिद्ध करने के लिये किया जाता हे कि हिट्टियों का लोहे के उत्पादन पर नियंत्रण था तथा लोहा वाणिज्यिक विनिमय का एक उत्पाद था। इसके अलावा इसका उपयोग उनकी तकनीकी श्रेष्ठता को साबित करने, कि वे 'अच्छा लोहा' बना सकते थे जिसे स्टील कहा गया था, को संदर्भित करने के लिये भी किया जाता है।

मानचित्र 10.1 : हिट्टी साम्राज्य (सीमांकित क्षेत्र) तथा उसका विस्तार (आच्छादित क्षेत्र), लगभग 1350-1300 बी सी ई

साभारः Near_East_topographic_map-blank.svg: Semhur

स्रोतः Creative Commons (https://en.wikipedia.org/wiki/File:Map_Hittite_rule_en.svg)

कोर्डानी (2016) ने जे. सीगेलोवा को उद्धरित करते हुये लिखा है कि निम्न प्रकार से हिट्टियों के समय में लोहे के प्रसार की प्रक्रिया को समझा जा सकता हैः सर्वप्रथम प्राचीन हिट्टी काल में अर्थात् 1700-1600 बी सी ई, जिस समय लोहे को मूल्यवान समझा गया तथा उसे अनुष्ठानों से जोड़ा गया। द्वितीय, मध्य हिट्टी काल (1500-1400 बी सी ई) जब लोहे की वस्तुओं में वृद्धि हुई तथा लोहे को उत्सवों की वस्तुओं में शामिल किया गया। तृतीय, हिट्टी साम्राज्य के प्रभुत्व का काल (1300-1200 बी सी ई), जिस समय लोहे की विभिन्न वस्तुओं जैसे खंजर, चाकू, भाले इत्यादि का उत्पादन हुआ। हालांकि इस अवधि में आभूषणों के रूप में लोहे के प्रयोग में कमी आई। इस विभाजन द्वारा सीगेलोवा ने लोहे के प्रयोग के तरीकों को दिखाया, जिसमें उसे मूल्यवान धातु से एक साधारण प्रयोग की धातु के रूप में पहचाना गया।

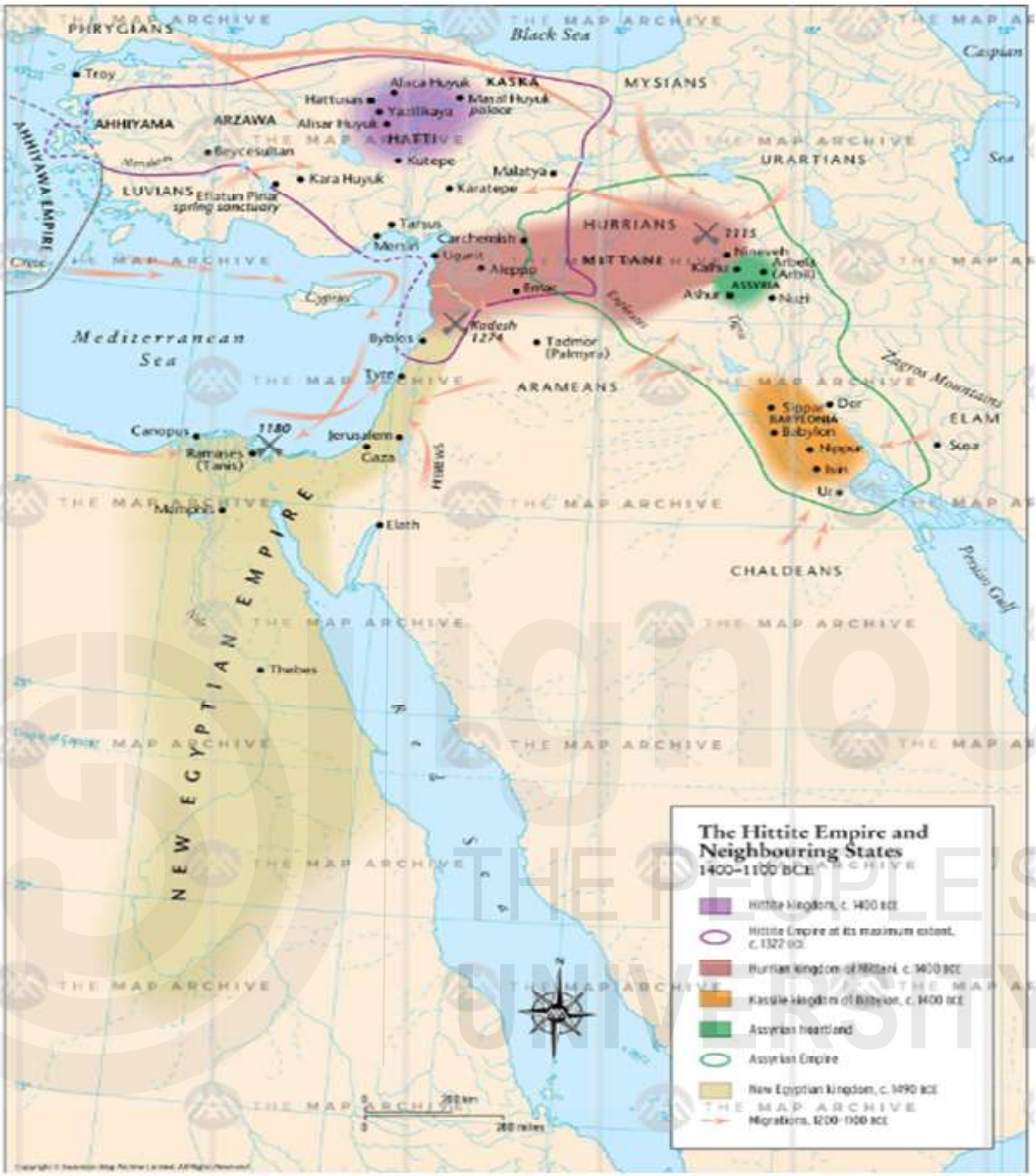

मानचित्र 10.2 : हिट्टी साम्राज्य तथा पड़ोसी राज्य, 1400-1100 बी सी ई

स्रोत: https://www.themaparchive.com/the-hittite-empire-and-neighbouring-states-14001100-bce.html

प्रारंभिक अवधि में (1700-1600 बी सी ई) हिट्टियों ने लोहे का प्रयोग मात्र अनुष्ठानों में किया तथा इसको लाजवर्द तथा दूसरी अर्द्ध-बहुमूल्य वस्तुओं के साथ उल्लेखित किया गया था। मिट्टी की पट्टिकायें, जिन्हें बोगाज्कॉय (तुर्की) के महल में पाया गया है, में लोहे का सोने, चाँदी, ताँबे तथा कांस्य के साथ उल्लेख किया गया है। एक प्रारंभिक हिट्टी साक्ष्य लोहे के सिंहासन तथा एक राजदंड (राजा की छड़ी अथवा राजा द्वारा धारण किए जाने वाला राजदंड) का उल्लेख करता है। लिखित साक्ष्य चाकू, खंजर, तलवार, तथा दूसरे मिश्रित उपकरणों का उल्लेख करते हैं। हिट्टी लेख लौह श्रमिकों का भी उल्लेख करते हैं।

हालांकि याल्सीन तथा दूसरे अन्य विद्वान हिट्टिओं के अलावा ऐसी दूसरी जगहों का उल्लेख करते हैं जैसे कि अनातोलिया, जहाँ भी लोहे को पिघलाया जाता था। इस आधार पर ये

विद्वान लोहे पर हिट्टी एकाधिकार पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। हिट्टी दस्तावेज, जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया है, निस्संदेह दर्शाते हैं कि उनके द्वारा सफलतापूर्वक लौह तथा इससे बने औज़ारों का उत्पादन द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई में किया जाता था, हालांकि पुरातात्विक साक्ष्यों में यहाँ लोहे की सीमित वस्तुएं मिली हैं। इस क्षेत्र का राजनीतिक इतिहास संसाधनों को लेकर मित्तानी तथा हिट्टी सत्ता संघर्ष को इंगित करता है। हिट्टी शासक सप्पीलुलिमस प्रथम (लगभग 1380-1346 बी सी ई) का मित्तानी शासक के ऊपर आक्रमण का यह एक कारण था। तत्पश्चात् हिट्टियों का अलेप्पो तथा अलाका पर नियंत्रण का कारण भी मित्तानी लोहे के भण्डारों पर नियंत्रण के प्रयत्न का प्रयास था। इस प्रकार, यह इस अवधारणा को खारिज करता है कि सिर्फ हिट्टियां को ही लौह कार्य का ज्ञान था।

विद्धानों का मानना है कि लोहे के बने अच्छे उपकरणों को नौवीं शताब्दी बी सी ई का माना जा सकता है। लोहे की कुल्हाड़ी जिसका हैंडल तांबे का था रस शामरा, उगरित से प्राप्त हुई है जिसे मित्तानी राजा तुसत्ता ने फिरौन अमीनोफिस तृतीय (1413-1375 बी सी ई) को चौदहवी शताब्दी बी सी ई में उपहार स्वरूप भेंट किया था, जिसका वर्णन मिस्र से प्राप्त मिट्टी की एक पट्टिका पर उत्कीर्ण है। यह फिर से इस बात का खंडन करता है कि केवल हिट्टियों को ही लोहे का ज्ञान था। इसके अलावा उपहार-सूची में लोहे के खंजर तथा स्टील खंजर में भी अंतर किया गया है। इससे पता चलता है कि मित्तानियों को लोहे को पिघलाने की जानकारी थी तथा वे कार्बुराइज़्ड लोहा अर्थात् स्टील भी बना सकते थे।

इसके अलावा, प्रारंभिक असीरियाई साक्ष्य खोरसाबाद, निमरूद, निनेवेह के लोहे के भण्डारों (iron hoards) से मिलते हैं। यहाँ पर हुई खुदाई में लोहे के बने भाले, खंजर, तीर के फलक, हेलमेट, कवचों के अंश, कुल्हाड़ी, हॅसिया, कीलें, हथौड़ा आदि मिले हैं। सर्वाधिक प्रारंभिक साक्ष्य मंदिरों को दिये गये दान के रूप में मिलता है। शालमानेसर प्रथम (लगभग 1274-1245 बी सी ई) अपने अभिलेख में वर्णित करता है कि, उसने मूल्यवान वस्तुएं जिसमें लोहे की बनी वस्तुएं भी शामिल थीं, असुर (एक अक्कादियन नगर) मंदिर को दान कीं। हिट्टी दस्तावेजों के समान ही प्रारम्भिक काल में यहां भी लोहे को एक महत्वपूर्ण धातु माना जाता था। बाद में लोहे का राजकीय हथियार के रूप में उल्लेख किया गया। राजा तिगलथ पिलेसर प्रथम (लगभग 1115-1077 बी सी ई) ने अपने अभिलेख में शिकार के लिये उसके द्वारा लोहे के तीर की नोक का वर्णन किया है। अतः लोहे का प्रयोग अभिजात वर्ग द्वारा किया जाता था तथा इसे एक मूल्यवान वस्तु समझा जाता था। उदाहरण के लिये, असीरियाई राजा तुकुल्ती निनुर्ता द्वितीय (लगभग 890-884 बी सी ई) ने भेंट में चाँदी तथा लोहे के सौ खंजरों को स्वीकार किया। सातवीं शताब्दी बी सी ई के उत्तरार्ध में राजा असुरबनीपाल (लगभग 668-627 बी सी ई) द्वारा शिकार के समय लोहे के खंजर के प्रयोग का वर्णन मिलता है। नौवी शताब्दी बी सी ई के असीरियाई साक्ष्य भेंट में दी गई वस्तुओं में लोहे का वर्णन करते हैं। असीरियाई राजा असुरनसीरपाल द्वितीय (883-859 बी सी ई) ने पहाड़ों में प्रयोग की जाने वाली लोहे तथा ताँबे की छोटी कुल्हाड़ियों का वर्णन किया है। इस प्रकार लोहा अभिलेखों में वर्णन करने, उपहार देने तथा राजा को भेंट देने के लिये उपयुक्त महत्व की धातु थी। यह राजा की सैन्य शक्ति का प्रतीक था।

असीरियाई रिकॉर्ड तथा पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार आठवीं शताब्दी बी सी ई के उत्तरार्द्ध से औज़ार बनाने में लोहे का प्रयोग किया जा रहा था। कुदाल, कुल्हाड़ी, कीलें आदि के विषय में विभिन्न शासकों के अभिलेखीय साक्ष्य मिलते हैं। खुदाई के दौरान लोहे की कीलें खोरसाबाद से मिली हैं। निमरूद से खुदाई में कुल्हाड़ी-बसूला प्राप्त हुए हैं। लोहे के हल को सातवीं शताब्दी बी सी ई के साक्ष्यों में उल्लेखित किया गया है[1]। बढ़ई के कुछ औज़ार भी

[1] ईसरहाड्डोन (लगभग 680-669 बी सी ई) की सामंतों के साथ सन्धियों में लोहे के हल का प्रयोग उपमा के रूप में किया गया है।

खोरसाबाद के उत्खनन से प्राप्त किये गये हैं (प्लाइनर, इत्यादि, 1974)। इस प्रकार लोहे का उल्लेख प्रारंभ में राजाओं द्वारा एक प्रमुख मूल्यवान धातु के रूप में किया गया तथा बाद में आठवीं शताब्दी से यह एक घरेलू उपयोग की वस्तु बन गया।

बोध प्रश्न-2

1) लोहे को पिघलाने की तकनीकी ने किस तरह निकट पूर्व में नये राज्यों के उदय में सहायता प्रदान की?

.....

.....

.....

.....

.....

2) हिट्टियों को लौह उत्पादन में सर्वोच्च क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

10.7 यूरोप में लौह युग

यूरोप में लोहे के साक्ष्य 12वीं-10वीं शताब्दी बी सी ई से मिलते हैं तथा यूनानी बस्तियों में केवल आठवीं शताब्दी बी सी ई से ही प्रचुर मात्रा में इसका उपयोग किया गया। मायसीनियन-मिनोअन कांस्य सभ्यता के पतन के बाद ही 'अंधकारमय युग' या प्रारंभिक लौह युग की शुरुआत होती है। तकनीकी दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण घटना लोहे को पिघलाने की तकनीकी का विकास था। लोहा सस्ता तथा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था और इसका प्रयोग विभिन्न उपकरणों को बनाने में किया गया।

यूरोपीय संदर्भ में, लौह युग में विभिन्न जनजातीय समुदायों का उदय हुआ जैसे सैल्ट्स, एट्रूस्कन, आईबेरियन तथा और अन्य दूसरे समुदाय। यूनानियों ने लोहे के खंजर तथा तलवारों को तथा साथ ही लोहे की तकनीकी को लेवांट (पूर्वी भूमध्यसागर) तथा पश्चिमी एनातोलिया से प्राप्त किया। लोहे की तकनीकी का प्रसार हिट्टियों द्वारा ईरान में तथा उत्तर पूर्व काकेशस से कोबानी क्षेत्र की ओर हुआ। प्रारम्भिक लोहे के हथियार, जो कि यूरोप में 10वीं शताब्दी बी सी ई तक के हैं, वे कांस्ययुगीन सभ्यताओं के समान निर्मित थे।

यूरोप की उत्तर कांस्ययुगीन सभ्यतायें जैसे कि पश्चिमी हंगरी की कलश संस्कृति (1800-1200 बी सी ई) केन्द्रीकृत नहीं थीं, लेकिन उन्होंने अपने वातावरण का अच्छी तरह से उपयोग किया। उनमें किसान, व्यापारी तथा धातुकर्मी शामिल थे। 1000 बी सी ई के पश्चात् उन्होंने अपने व्यापारिक संबंधों द्वारा पूरे यूरोप में लोहे की तकनीकी के प्रसार में मदद की। प्रायः ऐसा माना जाता है कि लोहे की तकनीकी का सर्वप्रथम विकास एनातोलिया में हुआ तथा अन्य क्षेत्रों में उसका प्रसार पूर्वी भूमध्यसागरीय इलाकों में बसने वाले समूहों तथा काला सागर के अर्द्ध-

घुमन्तू समुदायों द्वारा हुआ। प्रारंम्भिक लौह वस्तुओं में अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त कांस्य की तलवार की मूठ स्विटज़रलैंड से तथा तलवार ब्लेड और तीर फ्रांस से मिले हैं।

जैसा कि पहले वर्णित किया जा चुका है कि लौह तकनीकी कांस्य से अलग थी, लेकिन लौह धातु के सस्ता तथा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण इसका प्रयोग औज़ार तथा हथियार बनाने में किया गया। लोहे के प्रयोग से कृषि क्षेत्र में जैसे कि कुल्हाड़ी, कुदाली, हल के फाल से अधिक उत्पादन तथा बेहतर भोजन अधिशेष ने यूरोप में परिवर्तन लाने में मुख्य भूमिका अदा की। हम इसकी विस्तृत जानकारी यूरोपीय लौह युग की प्रारंम्भिक संस्कृति में एक अध्ययन के रूप में हॉलस्टॉट संस्कृति में देखेंगे।

हॉलस्टॉट संस्कृति

हॉलस्टॉट संस्कृति दक्षिण ऑस्ट्रियाई शहर साल्ज़बर्ग में विकसित हुई जहां कब्रों में सुनहरी अंबर, कांच, कांस्य तथा लोहे के साक्ष्य मिले हैं। तलवार, खंजर, कुल्हाड़ी भी बड़ी मात्रा में प्राप्त हुई हैं। हॉलस्टॉट संस्कृति मध्य यूरोप में कांस्य से लौह युगीन सभ्यता के संक्रमण को दर्शाती है। उस क्षेत्र में हॉलस्टॉट संस्कृति आठवीं तथा सातवीं शताब्दी बी सी ई में विकसित हुई जहां से यह द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई में पश्चिमी हंगरी की अर्नफील्ड (कलश) संस्कृति, जो कि योद्धा समूह थे, में फैली। उन्हें उनकी दफन संस्कृति के आधार पर परिभाषित किया जाता है जिसमें वे मृतकों का दाह संस्कार कर उसकी राख को एक कलश में दफन करते थे। कालांतर में उनका प्रसार यूरोप के मध्य तथा पश्चिमी क्षेत्रों में हुआ। वे अपनी कांस्य कलाकृतियों तथा किलेबंदी के लिए जाने जाते थे।

हॉलस्टॉट 800 बी सी ई में ऑस्ट्रियन आल्पस में एक मुख्य व्यापार केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। नमक की खानों के पास के कब्रिस्तान से कांस्य की वस्तुओं के अतिरिक्त प्रारम्भिक लौह युग के कई लोहे के हथियार जैस चाकू, बाणाग्र, तलवारें आदि प्राप्त हुये हैं। इस क्षेत्र में व्यापार विकसित था तथा ये क्षेत्र शीघ्र ही व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित हो गया जैसे कि ह्यूनबर्ग। इस काल की प्रमुख विशेषता लकड़ी के बने कमरों में शवाधानों की उपस्थिति थी। कब्रें योद्धा समूह को इंगित करती हैं क्योंकि उनके साथ हेलमेट, कवच तथा अन्य दूसरे प्रकार के बर्तन, जो कांस्य के बने थे, दफन किये गये हैं। कब्र से प्राप्त तलवारें लोहे की बनी हुई हैं तथा कभी-कभी वे कांस्य की भी बनी हुई थीं।

हॉलस्टॉट काल में पश्चिम-मध्य यूरोप के अभिजात वर्ग ने पहाड़ी के ऊपर मजबूत किले रूपी बस्तियां बनाईं जो कि प्रशासनिक केन्द्र भी थीं। उन्होंने अपने मृतकों को आकर्षक आभूषणों, कवच तथा हथियारों के साथ दफनाया। इससे पता चलता है कि यह एक ऐसा समाज था जिसमें युद्ध तथा छापेमारी प्रमुख पहलू थे। इनके भूमध्यसागर के साथ भी अच्छे संबंध थे। पीटर एस. वैल्स (1994) ने किले वाले क्षेत्र को शहर के रूप में परिभाषित किया है, जहां व्यापारिक कार्यकलाप भी होते थे जबकि आर्नोल्ड का मानना है कि यह मात्र प्रतीकात्मक था। हॉलस्टॉट सभ्यता के अंतिम चरण में छोटी तलवारें प्रमुख थीं तथा 500 बी सी ई तक इसके कुछ केन्द्र पश्चिम की तरफ चले गये। ह्यूनबर्ग हॉलस्टॉट शासक का एक ऐसा ही केन्द्र था। यह डेन्यूब, जर्मनी, की पहाड़ी पर स्थित था। यहां किलेबंदी का नवीनीकरण 650-450 बी सी ई में किया गया। दीवारें कभी-कभी मिट्टी की ईंटों से बनी होती थीं, जो कि भूमध्यसागरीय प्रभाव को दर्शाता है। वे लोग मसालिया के साथ, जो राइन के पास यूनानियों का एक व्यापारिक केन्द्र था, काले अंजीर, फूलदानों, सिल्क आदि के अलावा जगों तथा जारों (amphorae) का व्यापार किया करते थे।

अभिजात वर्ग द्वारा एकत्रित धन को कब्रों में देखा जा सकता है। इन कब्रों में लकड़ी की वस्तुओं, मनकों, बर्तनों के अलावा कांस्य की बनी अनेक वस्तुएं प्राप्त होती हैं। हालांकि

भूमध्यसागर से व्यापार पूर्ण रूप से नहीं रूका लेकिन व्यापारिक संबंधों में पतन आया। 400 बी सी ई में इस क्षेत्र को छोड़ दिया गया तथा उसके बाद की कब्रें यहां नहीं प्राप्त होतीं। हॉलस्टॉट संस्कृति के बाद यहां ला तेने (La Tene) संस्कृति विकसित हुई जो उत्तर लौह युग की है और इसका कार्यकाल 600-400 बी सी ई का है। इस काल में उत्पादन तथा व्यापार के क्षेत्रीय केन्द्र पोलैण्ड तथा दूसरे इलाकों में विकसित हुये। इस काल में लोहे का प्रचलन और बढ़ा तथा उसका उपयोग सभी वर्ग करने लगे, और अब यह सिर्फ अभिजात वर्ग तक ही सीमित नहीं रह गया था।

बोध प्रश्न-3

1) यूरोप में लोहे के विकास का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) हॉलस्टॉट संस्कृति के काल में स्थापित बस्तियों की प्रकृति क्या थी?

.....

.....

.....

.....

.....

10.8 सारांश

प्रथम तथा द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई में एशिया तथा यूरोप में हुए तकनीकी परिवर्तनों में लौह प्रौद्योगिकी प्रमुख थी। लोहे की तकनीकी, मुख्य रूप से कार्बुराइज़ेशन तथा क्वेंचिंग तकनीकों की शुरुआत के कारण, इससे बढ़िया तथा मज़बूत हथियार तथा उपकरण बनाना संभव हुआ। हालांकि प्रथम चरण के दौरान लोहे को एक मूल्यवान धातु समझा गया तथा यह राजशाही का प्रतीक था। लेकिन बाद के चरणों में इसने रोज़मर्रा की जिंदगी को प्रभावित किया। लोहा एक कठोर तथा ठोस धातु होने के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। शुरुआत में इसका प्रयोग हथियार बनाने में किया गया लेकिन जैसे-जैसे तकनीकी में विकास हुआ उससे अच्छे तथा मज़बूत उपकरण बनाये जाने लगे, जिन्हें बाद में कृषि क्षेत्र में भी प्रयोग किया गया। सभ्यता के प्रसार के साथ घुड़सवार योद्धा वर्ग, धन के आदान-प्रदान, शहर, व्यापार आदि में लोहा प्रमुख परिवर्तन लाया। हथियारों से लेकर कृषि उपकरणों तक लोहे के विभिन्न निहितार्थ प्रभावों को देखा जा सकता है।

10.9 शब्दावली

कार्बुराइज़ेशन : लोहे को कार्बन पदार्थ तथा चारकोल के साथ गर्म करने की प्रक्रिया जिससे धातु कठोर होती है।

उल्का	:	आकाशीय छोटी चट्टानें या धातु पदार्थ
उल्का लौह	:	उल्कापिंडों में पाया जाने वाला लोहा
अयस्क	:	प्राकृतिक चट्टान या मिट्टी जिससे धातु या खनिज निकाला जा सकता है।
क्वेंचिंग	:	धातु को जल्दी से पानी, तेल या हवा के दबाव से ठंडा करने की प्रक्रिया जिससे विशेष धातु प्राप्त की जा सके, जैसे कि उसे कठोर करना।
प्रगलन	:	एक अयस्क को उसके पिघलाने वाले तापमान से अधिक गर्म करना जिससे शुद्ध धातु प्राप्त की जा सके।
टैम्परिंग	:	धातु को पुनः गर्म करने की प्रक्रिया जिससे इसे मज़बूत तथा कठोर बनाया जा सके।
स्थलीय लौह	:	पृथ्वी से निकलने वाला लौहा

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) लिखित साक्ष्य तथा पुरातात्विक साक्ष्यों का उल्लेख करें जो लोहे के प्रारम्भिक प्रयोग को दर्शाते हैं। साथ में लोहे के धीरे-धीरे बढ़ते उपयोगों का वर्णन करें। उप-भाग 10.4.1 और 10.4.2 देखें

2) ब्लूमरी प्रक्रिया को बतायें तथा कैसे कार्बुराइज़ेशन, क्वेंचिंग तथा टैम्परिंग से लोहे को मज़बूत बनाते थे और यह तांबे तथा दूसरी धातुओं से लोहे को अलग करता है। भाग 10.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) नये राज्यों के उदय के बारे में लिखें तथा उन्होंने कैसे लोहे के हथियारों तथा घोड़ों को अपना आधार बनाया। भाग 10.6 देखें

2) 'लौह पत्र' को संदर्भित करें तथा दूसरे साक्ष्यों को बतायें जो हिट्टियों की सर्वोच्चता की बात करते हैं। विद्वान इस अवधारणा को खारिज क्यों करते हैं। उसका कारण भी स्पष्ट करें। भाग 10.6 देखें

बोध प्रश्न-3

1) यूरोप में लौह युग की शुरुआत के बारे में बतायें। भाग 10.7 देखें

2) शहरों की उत्पत्ति के बारे में बतायें तथा फलती-फूलती बस्तियों के बारे में भी बतायें। भाग 10.7 देखें

10.11 संदर्भ ग्रंथ

चाइल्ड, वी. गॉर्डन. 1928. 'दे ओरिजिन ऑफ सम हॉलस्टॉट टाइप्स'. *मैन,* 28: 191-193.

चाइल्ड, वी. गॉर्डन. 1956. *व्हॉट हैपन्ड इन हिस्ट्री.* हारमोन्ड्सवर्थः पेरेग्रिन बुक्स.

कॉर्डानी, वियोलेट्टा. 2016. 'द डेवलपमैंट ऑफ हिट्टाइट आयरन इंडस्ट्री, ए रिअप्रजल ऑफ द रिटन सोर्सिज'. *डाइ वेल्ट देस ऑरियण्ट्स.* बीडी. 46. एच. 2: 162-176.

दानी, ए. एच. एवं जे. पी. मोहन. 1996. (सं). *हिस्ट्री ऑफ ह्यूमैनिटी.* भाग 2, लन्दन.

लिवरानी, मारियो. 1996. *इकॉनोमिक एण्ड सोशियो - पॉलिटिकल डैवलपमेंट्स'. हिस्ट्री आफ ह्यूमैनिटी.* भाग-2. ए. एच. दानी एवं जे. पी. मोहन (सं). पृ. 126:141.

मॉरिस, इआन. 1989. 'सर्कुलेशन, डिपोज़िशन, एंड द फार्मेशन ऑफ द ग्रीक आयरन ऐज'. *मैन.* न्यू सीरीज. भाग 24. नं. 3: 502-519.

मुहली, जे. डी. आर. मेड्डिन, टी. स्टेच एवं ऑजगैन. 1985. 'आयरन इन अनातोलिया एण्ड द नेचर आफ द हिट्टाइट आयरन इंडस्ट्री'. *अनातोलियिन स्टडीज.* 35: 67-84.

मुहली, जे.डी., आर. मेड्डिन, टी.एस. व्हीलर. 1977. 'हाउ द आयरन ऐज बिगेन'. *साइंटिफिक अमेरिकन.* भाग 234. नं. 4: 122-131.

प्लैनर, रैडोमीर. एवं जूडिथ के. ब्जोर्कमन. 1974. 'द असीरियन आयरन एजः द हिस्ट्री ऑफ आयरन इन द असीरियन सिविलाइजेशन'. *प्रोसीडिंग्स आफ द अमेरिकन फिलोसोफिकल सोसाइटी.* 118 (3): 283-313.

विलार्ड, पियरे. 1996. 'द बिगनिंग आफ द आयरन ऐजः इन्वेंशन आफ आयरन वर्क एण्ड इट्स कॉन्सीक्वेंसेज़'. *हिस्ट्री आफ ह्यूमैनिटी.* भाग 2. संपादित ए. एच. दानी एवं जे. पी. मोहन. (लंदन) पृ. 190-204.

वेल्स, पीटर. एस. 1994. 'चेंजिंग माडल्स आफ सैट्लमैंट, इकोनामी, एण्ड रिचुअल एक्टिविटीः रिसेंट रिसर्च इन लेट प्रीहिस्टोरिक सेंट्रल यूरोप'. *जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजिकल रिसर्च.* भाग 2: 135-163.

याल्सीन, उनसल. 1999. 'अर्ली आयरन टैक्नोलॉजी इन अनातोलिया'. *अनातोलियन स्टडीज.* भाग 49. *अनातोलियन आयरन ऐजेज़ 4. प्रोसीडिंग्स ऑफ द फोर्थ अनातोलियन आयरन ऐजेज़ कोलोक्यूअम. मेर्सिन* में आयोजित. पृ. 177-187.

पी डी एफः

http://www/jstor.org/stable/pdf/25800588.pdf?refreqid=search%3Ab02adf8dac2d1c844bb8ccc05d03ecfb

http://www/jstor.org/stable/pdf/2802704.pdf?refreqid=search%3Ab07df0441c61f05a888alacbf095a7afaa

http://www/jstor.org/stable/pdf/2802442.pdf?refreqid=search%3Af102c8446f36316dcad0c8119dd09c2f

http://www/jstor.org/stable/pdf/41407098.pdf?refreqid=search%3A8ea56e0714093a0629f6c0a4cf660d0e

10.12 शैक्षणिक वीडियो

प्रीहिस्टॉरिक आयरन स्मैल्टिंग डैमोस्ट्रेशन्स
https://www.youtube.com/watch?v=KP4DjM3jBsw

फॉरगॉटन एम्पायर्सः द हिट्टाइट किंगडम। डिस्कवरी हिस्ट्री चैनल
https://www.youtube.com/watch?v=5SmUAIFFwbk

इकाई 11 मध्य और पश्चिम एशिया में खानाबदोश समूह*

इकाई की रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 भौगोलिक विशेषताएं: मध्य एशिया

11.4 मध्य एशिया में खानाबदोश जीवन का विकास

11.5 मध्य एशिया में खानाबदोश और खानाबदोश साम्राज्य

11.6 बेदुइन (बद्दू): पश्चिम एशिया के खानाबदोश

11.7 मध्य एशिया के प्रमुख खानाबदोश समूह

- 11.7.1 सीथियन
- 11.7.2 ज़िआँगनू
- 11.7.3 हूण
- 11.7.4 वुसुन
- 11.7.5 तुर्क
- 11.7.6 मंगोल

11.8 राजनीतिक संरचना

11.9 खानाबदोश समाज

11.10 खानाबदोश कला

11.11 सारांश

11.12 शब्दावली

11.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.14 संदर्भ ग्रंथ

11.15 शैक्षणिक वीडियो

11.1 उद्देश्य

इस इकाई में मोटे तौर पर सातवीं शताब्दी बी सी ई से मध्य और पश्चिम एशिया के प्रमुख खानाबदोश समूहों पर चर्चा की जाएगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- खानाबदोश जीवन के बारे में व्याख्या कर पाएंगे,
- खानाबदोशों और पशुपालक खानाबदोशों में भेद कर पाएंगे,
- मध्य और पश्चिम एशिया में खानाबदोशों के विकास को समझ पाएंगे,

* डॉ. बिंदु साहनी, फेलो, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला

- मध्य और पश्चिम एशिया के प्रमुख खानाबदोश समूहों की पहचान कर पाएंगे, और
- प्रमुख खानाबदोश समूहों के सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन के बारे में जान पाएंगे।

11.2 प्रस्तावना

खानाबदोश, पशुचारी खानाबदोश और खानाबदोश साम्राज्य मध्य और पश्चिम एशिया की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। मध्य एशिया की खानाबदोश जनजातियों ने हमेशा इतिहासकारों का ध्यान आकर्षित किया है और इन्होंने खानाबदोश इतिहास की दुनिया में एक विशेष स्थान प्राप्त किया है। अपने विविध परिदृश्य के कारण मध्य एशिया कई प्रकार की आबादियों का घर रहा है।

स्थिर जीवन और स्थिरता एक ही स्थान पर मनुष्यों के वास को दर्शाती है, जो प्रायः कृषि द्वारा अपना जीवन यापन करते हैं। दूसरी ओर, खानाबदोश समूह वे हैं, जो एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते रहते हैं। खानाबदोश जीवन अपनाने के लिए बुनियादी कारक क्षेत्र विशेष की पर्यावरणीय स्थिति होती है। मध्य एशिया के संदर्भ में खानाबदोश और स्थिर जीवनयापन करने वाले एक दूसरे के समकालीन हैं। कुछ खानाबदोश समूहों ने भोजन-संग्रहण के साथ-साथ पशुचारी खानाबदोश जीवन अपनाया, जिसने आगे चलकर खानाबदोश साम्राज्य की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

अंतिम कांस्य युग में आखेटक-संग्रहकों ने परिवारों के छोटे समूह में रहना शुरू किया, इस प्रकार जनजातियों के गठन की शुरुआत हुई। इन जनजातियों ने पालतू पशुओं को रखना शुरू कर दिया, जिनके लिए चरागाह[1] की तलाश में उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान जाना पड़ता था। इन शक्तिशाली पशुचारी खानाबदोश समूहों के उदय के साथ, इन्होंने कृषि समाजों पर हमला करना भी शुरू किया, जिसने खानाबदोश साम्राज्यों के गठन का मार्ग प्रशस्त किया।

ए. एम. खजानोव के अनुसार, 'पशुचारी खानाबदोश एक ऐसी खाद्य अर्थव्यवस्था है, जहां पूरा समुदाय भोजन की आपूर्ति के लिए अपने पालतू पशुओं पर निर्भर रहता है'। इस प्रकार खानाबदोश, पशुचारी खानाबदोशों से पूरी तरह अलग हैं। खानाबदोशों में वे लोग शामिल हैं जो अपने अस्तित्व के लिए भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते रहते हैं। जबकि पशुचारी खानाबदोश, वे खानाबदोश हैं जो अपनी आजीविका के लिए पालतू पशुओं को साथ में रखते थे और अपने पशुओं के लिए चरागाहों की तलाश में ऐसे स्थानों को पलायन भी करते थे जहां इन पशुओं की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। मध्य एशिया के लोगों ने पशुचारी खानाबदोश जीवन को अपनाया, जो पूरी तरह से आजीविका के लिए अपने पशुओं पर निर्भर थे। अपने झुंड के लिए उन्हें व्यापक चरागाहों की आवश्यकता थी। अतः वे 4 से 5 परिवारों के समूहों में रहते थे। विभिन्न मौसमी तिमाहियों में वे अपने पशुओं के झुंड के साथ एक जगह से दूसरी जगह पलायन करते थे। सर्दियों में शिविर के लिए वे जंगलों के पास के स्थानों और पहाड़ों की घाटियों में रहते थे।

खानाबदोश जीवन एक या संयुक्त अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भर होता है, जिसमें पशुपालन, भोजन संग्रहण कृषि अथवा व्यापार शामिल हैं। खानाबदोश दुनिया की इन विशेषताओं की उत्पत्ति को समझने के लिए सबसे पहले उन परिस्थितियों को समझना होगा जिन्होंने मध्य और पश्चिम एशिया में उनके विकास में मदद की।

[1] चरागाह वह भूमि है, जो घास और दूसरे पौधों से आच्छादित होती है और जो पशुओं, विशेष रूप से गाय या भेड़, के चरने के लिए उपयुक्त होती है।

11.3 भौगोलिक विशेषताएं : मध्य एशिया

मध्य एशिया में आधुनिक कजाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान के हिस्से शामिल हैं। इस क्षेत्र की प्राकृतिक परिस्थितियों और जलवायु में अत्यधिक विविधता है। क्षेत्रीय रूप से पश्चिम और उत्तर में व्यापक मैदान हैं, जबकि दक्षिणी और पूर्वी क्षेत्र पहाड़ी हैं। कोपेत दाग की पर्वत श्रृंखला जो दक्षिण पश्चिम से पामीर और पूर्व में तीअन शान तक फैली है, यह अन्य क्षेत्रों से मध्य एशिया को अलग करती है। मध्य एशिया की वन पट्टी की चौड़ाई 500 से 1000 मील (800 से 1600 किलोमीटर) और दक्षिण पट्टी हंगरी से मंगोलिया तक मध्य एशिया के स्टैप्स मैदानों तक फैली हुई है। इस प्रकार मध्य एशिया में विशाल घास के मैदान थे, और यह क्षेत्र द्वीपों, समुद्रों और झीलों से समृद्ध था, जिसने खानाबदोश साम्राज्यों के विकास में सहायता प्रदान की।

मानचित्र 11.1: मध्य एशिया

साभार : काकाहुआत

स्रोतः विकीमिडिया कॉमंस (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Map_of_Central_Asia.png)

इसके पश्चिम में कैस्पियन सागर तथा पूर्व में बाल्खश झील है, जबकि अराल सागर महाद्वीप के केंद्र में है। यहां दो प्रमुख नदी तंत्र हैं, अमू दरिया ओर सीर दरिया, जो अराल सागर में मिलते हैं। अराल सागर दक्षिण और पश्चिम में दो रेगिस्तानों से घिरा हुआ है, करा कुम ('काली रेत' के रूप में जाना जाता है) और किज़िल कुम ('लाल रेत' के रूप में जाना जाता है)। करा कुम रेगिस्तान उत्तरी तुर्कमेनिस्तान में है और यहां पौधों और सब्जियों की पैदावार के लिए पर्याप्त वर्षा होती है। किज़िल कुम कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान और आंशिक रूप से तुर्कमेनिस्तान में है। इस रेगिस्तान में बसंत के मौसम में हरियाली छा जाती है और यहां सब्जियां और पौधे विरल खानाबदोश आबादी के पोषण करने के लिए पर्याप्त थे।

इनके अलावा, इस क्षेत्र में तीन नखलिस्तान (oasis) हैं – अमू दरिया के पास खीवान नखलिस्तान, ज़रफशान (जेरावशान) घाटी जो समरकंद को बुखारा से जोड़ती है और फरगना घाटी जो पामीर के उत्तर में स्थित है। इन क्षेत्रों में पहाड़ और स्टैप्स (घास के मैदान) हैं जो कृषि के लिए अनुपयोगी थे, लेकिन उनके समृद्ध चरागाह, खानाबदोश आबादी के निवास के लिए उपयुक्त स्थान थे।

मध्य एशिया की सर्वाधिक प्रमुख भौगोलिक विशेषता समुद्री प्रभाव से इसका पूर्ण पृथक्करण है। जल जीवन के लिए आवश्यक है, लेकिन मध्य एशिया ऐतिहासिक रूप से एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र रहा है जहां पानी की कमी थी। इसके अलावा, ऊँची पहाड़ियाँ मध्य एशिया से गर्मियों में बहने वाली हवाओं और मानसून को पूरी तरह से रोकती थीं। उच्च दवाब और हवाओं ने भी सर्दियों की भूमध्यसागरीय बारिश को अवरूद्ध किया। केवल अटलांटिक से गर्मी में पश्चिमी हवा का प्रवाह ही मध्य एशिया तक पहुंचा, लेकिन उसमें भी समय-समय पर परिवर्तन होता रहता था। हवा पतले जलमार्ग (gully) में स्थित कम दबाव की दिशा में अवश्य बहती थी, जो उत्तरी ध्रुवों में उच्च दबाव तथा दक्षिण में सहारा के उच्च दबाव के मध्य स्थित था, इसके बावजूद मध्य एशिया में वर्षा सीमित तथा अनियमित थी।

इस स्थिति में वहां मनुष्य के लिए दो विकल्प थेः जहां पानी उपलब्ध था उन स्थानों पर रहना या जहां भी पानी प्राप्त हो उस मार्ग का अनुगमन करना। इसका अर्थ था कि खाद्य फसलों की कृषि[2] की भूमि का पूर्ण रूप से परित्याग करना। खानाबदोश जनजातियों ने पशुचारी अर्थव्यवस्था को अपनाया, जिसने पुरुषों को खेती-बाड़ी के परिश्रम से दूर रखा तथा एक स्थायी वास को अनावश्यक बना दिया (हंबली 1966ः 10)।

11.4 मध्य एशिया में खानाबदोश जीवन का विकास

छठी सहस्राब्दी बी सी ई से चौथी सहस्राब्दी बी सी ई तक मध्य एशिया शिकारी-संग्राहक और मछली पकड़ने वाली आबादी का निवास स्थान था। 2000 बी सी ई के आसपास कई समुदायों ने धातु के प्रयोग की शुरुआत की जिसने कांस्य युग के लिए मार्ग प्रशस्त किया। मध्य एशिया में खानाबदोश सामाजिक संरचना के गठन की शुरुआत कांस्य युग के अंतिम चरण में हुई (13 से 12वीं शताब्दी बी सी ई)। कांस्य युग में इन शिकारी-संग्राहक और मछली पकड़ने वाली जनसंख्या ने समूहों में व्यवस्थित होना शुरू किया (आमतौर पर ये अलग-अलग परिवार थे) और एक साथ पलायन भी किया करते थे। शिकारी-संग्राहकों के इन समूहों के संगठन ने मध्य एशिया क्षेत्र में छोटी जनजातियों के गठन का मार्ग प्रशस्त किया। 'यहाँ शिकारी और मछुआरों की संस्कृति, जिन्होंने एक प्रकार की उत्पादक अर्थव्यवस्था को अपनाया, ने दूसरी सहस्राब्दी बी सी ई में स्टैप्स और अर्द्ध रेगिस्तान के पशुचारी निवासियों को विस्थापित कर दिया जिन्होंने तथाकथित स्टैप्स की कांस्य युग सभ्यता को जन्म दिया' (दानी, 1993ः 327)। 4500 बी सी ई तक आते-आते छोटे समुदायों ने उस क्षेत्र में स्थाई बस्तियां विकसित कर लीं तथा वे पशुपालन के साथ कृषि में भी संलग्न होने लगे। कजाकिस्तान के विशाल क्षेत्र, विशेष रूप से भूगर्भीय स्थितियों के अनुसार, खानाबदोश जीवन के प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था। बिखरे हुए खानाबदोश समूह भेड़, बकरी, घोड़े और ऊंट के झुंड रखते थे और उन्होंने पलायन के समय परिवहन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए नए चरागाह खोजने में उनका प्रयोग किया। मनुष्य द्वारा चरागाहों के खोजने के इस अभ्यास को ट्रांसह्यूमन्स (transhumance) के रूप में जाना जाता है। ये खानाबदोश घोड़े, ऊंट, भेड़, गाय-बैल, याक आदि पालते थे और उनसे भोजन और कपड़े भी प्राप्त करते थे। ये समूह आश्रय, ईंधन, परिवहन, अनाज और धातु के लिए अपने स्थायी निवासी कृषक पड़ोसियों पर निर्भर थे, जो उन्हें खानाबदोश जीवन से मिलना संभव नहीं था।

खानाबदोश संस्कृति स्टैप्स के घास के मैदानों में घोड़े को पालतू बनाने के साथ शुरू होती है। प्रारंभ में घोड़ों को केवल भोजन के स्रोत के रूप में और मांस के लिए रखा गया था। मेसोपोटामिया, मिस्र और चीन की सभ्यताओं के वासी अच्छी तरह से घोड़े से परिचित थे, लेकिन उन्हें घुड़सवारी की जानकारी नहीं थी। यह केवल 4000 बी सी ई के आसपास हुआ

[2] कृषि योग्य खेती एक ऐसी कृषि प्रणाली है जिसमें फसलों के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसके विपरीत पशुचारी खेती, कृषि का वह रूप है जिसका मुख्य उद्देश्य पशुधन उत्पादन करना है।

जब रथ और चौपहिया गाड़ी को खींचने के लिए परिवहन में घोड़ों का इस्तेमाल किया गया। इस अवधि में मनुष्य ने घोड़े को पालना शुरू कर दिया। पहिया-गाड़ी का प्रयोग मेसोपोटामिया सभ्यता द्वारा पहिए के प्रयोग के बाद किया गया। मेसोपोटामिया से पहिए की गाड़ियों का उपयोग मध्य एशिया की ओर फैला। तीसरी सहस्राब्दी बी सी ई तक घोड़े रथों को खींचने के लिए इस्तेमाल किए जाने लगे। खानाबदोश समूहों ने 2000 बी सी ई के आसपास पहियों वाले युद्ध रथों का उपयोग शुरू किया। 2000 बी सी ई के आसपास, घोड़े के उपयोग की प्रवृत्ति तथा पानी की कमी के कारण इस क्षेत्र में व्यापक कृषि कार्य में बाधा पैदा हुई। पीटर बी. गोल्डन (2011: 10) लिखते हैं कि '2000 बी सी ई से कुछ निर्वाह कृषक अगर पूरी तरह से न सही, काफी हद तक, अपने झुंडों पर निर्भर थे तथा मौसमी स्थानांतरणों में व्यस्त थे, जो स्टैप्स क्षेत्र में चरागाह स्थापित करते थे। वे पशुचारी खानाबदोश बन गये'। 2000 बी सी ई के आसपास घोड़ों के उपयोग तथा पानी की कमी से सिंचाई में कमी हुई जिसने इस क्षेत्र में व्यापक कृषि के प्रयोग में बाधा पहुंचाई। यह मध्य एशिया में खानाबदोश जीवन की उत्पत्ति का मुख्य कारण था।

जब तक मध्य एशिया के खानाबदोश घोड़े से अच्छी तरह से परिचित हुए, यूरेशिया के स्टैप्स क्षेत्र के खानाबदोशों ने घोड़े पर सवार होने के साथ-साथ लोहे की सीट का प्रयोग शुरू कर दिया था। इस काल को स्टैप्स में 'घोड़े की संस्कृति' के काल के रूप में जाना जाता है। सबसे पहले सीथियनों द्वारा घोड़े पर लोहे की चादर को सवारी के लिए प्रयोग किया गया। सीथियनों ने सवारी के लिए काठी[3] (saddle) का भी प्रयोग किया। लगभग इसी समय अलान कबीले (खानाबदोश समूह जो पहले से ही लोहे से परिचित था) ने **रकाब**[4] (stirrup) का उपयोग शुरू किया था।

घुड़सवारी ने इन खानाबदोशों की वेशभूषा में एक भारी परिवर्तन लाया, उन्होंने पायजामा पहनना शुरू किया, जिसने सवारी के समय पैरों के स्वतंत्र प्रयोग में मदद की। सीथियनों ने चमड़े के जूतों का उपयोग भी शुरू किया। चमड़े के जूतों का उपयोग मध्य एशिया में शुरू हुआ और धीरे-धीरे दुनिया के अन्य भागों में फैला। घुड़सवार के शरीर का ऊपरी भाग एक कोट द्वारा ढका होता था। सीथियन एक रक्षात्मक कवच भी पहनते थे, जो एक ढाल (shield) के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। कवच में छाती पर लगाने की एक सुरक्षा प्लेट शामिल थी, जो ऊपर सुरक्षा के लिए पहनी जाती थी। उनके द्वारा हेलमेट का भी इस्तेमाल किया जाता था। ये सभी वस्तुएं चमड़े की बनी होती थीं।

घोड़े की शक्ति के अनुभव तथा घुड़सवारी की शुरुआत के साथ खानाबदोश समूहों ने रथों का प्रयोग छोड़ दिया और सवारी के लिए अलग-अलग घोड़ों का प्रयोग किया जाने लगा। स्टैप्स के पहाड़ी क्षेत्रों में रथ के बजाय घुड़सवारी (लगभग 1700-1500 बी सी ई) अधिक आरामदायक तथा त्वरित थी (गोल्डन, 2011: 11)। घुड़सवारी इस प्रकार एक महत्वपूर्ण कारक था, जिसने क्षेत्र में खानाबदोशों के वर्चस्व को अगली कई सहस्राब्दियों के लिए स्थापित कर दिया (मैकगवर्न, 1939: 47)। घोड़े के साथ-साथ गाय, भैंस, ऊंट और याक को परिवहन के लिए इस्तेमाल किया गया और जो खानाबदोशों की दुग्ध की जरूरतों को पूरा करने में भी सक्षम थे। इन जानवरों में से प्रत्येक की निर्वाह आवश्यकताएं, घास और चराई के मामलों में भिन्न थीं, उनकी नस्लें बनाई गईं और वे स्टैप्स क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में महत्वपूर्ण साबित हुईं।

[3] गद्दी जिसे घोड़े की पीठ पर बांधा जाता था।

[4] फंदा अथवा छल्ला (बाद में लोहे का बनने लगा) जो घोड़े की काठी के दोनों तरफ जुड़ा होता था जो घोड़े पर सवार होने और सवारी करते समय सवार के पैर की पकड़ को स्थिर रखने में सहायता प्रदान करता था।

खानाबदोश जनजातियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी बस्तियां थीं। खानाबदोश जनजातियां होने के नाते वे टैंट में रहते थे तथा उन्होंने स्थाई घरों का निर्माण नहीं किया। मध्य एशिया के खानाबदोश विशेष तंबू में निवास करते थे, जिन्हें ***युर्त*** के रूप में जाना जाता है। एक समूह के लिए कई *युर्त* होते थे, जिसमें प्रत्येक में 5 लोग रह सकते थे। *युर्त* 'लकड़ी का हल्का सा ढांचा होता था जो जानवरों की खालों अथवा ऊनी कपड़े (felt) से ढका होता था, जिसे आसानी से बनाया और हटाया जा सकता था' (हरमट्टा, 1994: 485)। उनकी विशेषता थी कि वे किसी अन्य तंबू की तरह हटाए और आसानी से ले जाये जा सकते थे। खानाबदोश समूहों में *युर्त* के प्रकार जनजाति विशेष की स्थिति को इंगित करते थे। *युर्त* सामाजिक पदानुक्रम के अनुसार उप-विभाजित किए गए। 'खानाबदोश विशेष की जितनी अधिक प्रतिष्ठा होती थी उसका उतना ही बड़ा *युर्त* होता था' (एडले इत्यादि, 2008: 121)। *ये युर्त* आकार में बेलनाकार अथवा गोल होते थे तथा उनकी छतें शंकु आकार की होती थीं। *युर्त* आमतौर पर खाल, लकड़ी और विलो (willow) वृक्ष की शाखाओं, जो चमड़े की आड़ी शहतीर से जुड़ा होता था और साथ ही खाल की परतों से या बुने हुए कालीनों से ढका जाता था। *युर्त* के ढांचे में लकड़ी की जाली द्वारा 6 से 10 तक अलग-अलग खंड किए जाते थे जिसे आसानी से बड़ा अथवा छोटा किया जा सकता था। पोल बांधकर रखने के लिए छत का ढांचा एक हल्की शहतीर (rafter) से बना होता था जो छत को एक साथ गोलाकार छल्ले में रखने में मदद करता था। *युर्त* के अंदर फर्नीचर सरल और फैल्ट चटाईयों और कालीनों से ढका रहता था। संभवतः मध्य एशिया में बुने कालीनों को शुरुआत में फैल्ट से ही बनाया गया[5]।

चित्र 11.1 : *युर्त*

साभार: एलेक्जांड्र एल. कुन, 1840-1888

स्रोत:https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Syr_Darya_Oblast._Kyrgyz_Yurt_WDL10968.png

हमें हेरोडोटस के लेखन से, जिसने सीथियनों – पहला खानाबदोश समूह – के बारे में उल्लेख किया है, *युर्त* का सर्वप्रथम संदर्भ 449 बी सी ई में मिलता है। प्राचीन पूर्वी ईरानी मसागेताई खानाबदोशों की तुलना सीथियनों से करते हुए वह लिखते हैं कि 'वे किलेबंद नगरों के बिना रहते थे, सीथियनों की तरह रहने के लिए वे चार पहिए वाली गाड़ी (wagons) का प्रयोग करते थे, जिससे वे जहां भी जाएं अपने साथ ले जाएं, वे घुड़सवारी पर धनुष और तीर से लड़ने में अभ्यस्त थे और अपने भोजन के लिए वह कृषि पर निर्भर नहीं थे, बल्कि अपनी मवेशियों पर निर्भर थे' (हेरोडोटस, 1920: 47)। हूणों, जिन्होंने रोमन साम्राज्य को नष्ट करके एक महान् खानाबदोश साम्राज्य की स्थापना की, ने भी मध्य एशिया में *युर्त* संस्कृति के प्रचार में योगदान दिया।

[5] यह एक प्रकार का मोटा कपड़ा होता था जिसे कसकर, दबाकर और उसके अंदर ऊन भरी जाती थी, अक्सर इसे अन्य फाइबरों के साथ मिलाया जाता था।

संक्षेप में, पशुचारी खानाबदोशों की बुनियादी विशेषता घास के मैदान थे, निर्वाह के लिए जानवर, और गतिशीलता थी। एक साथ मिलकर वे भोजन, कपड़े और आश्रय के लिए मौलिक मानवीय जरूरतों की आपूर्ति कर सकते थे। उनका भोजन, दूध उत्पादों और मांस से प्राप्त होता था। मध्य एशियाई खानाबदोश समूहों के लिबास में भेड़ की खाल, कताई और बुनाई किए हुए ऊनी वस्त्र और चमड़े या फैल्ट से बने जूते शामिल थे। फर (fur) एक विलासिता की वस्तु थी जो जानवर की खाल की परतों से बनाई जाती थी।

खानाबदोश वहां गए जहां पर वे घास प्राप्ति की आशा कर सकते थे। यह कठोर वातावरण और मौसम संबंधी अनिश्चितताओं के खिलाफ निरंतर संघर्ष के साथ एक कठिन जीवन था। फिर भी, इन पशुचारी खानाबदोशों का जीवन आत्मनिर्भरता पर आधारित नहीं था। हालांकि मांस आधारित आहार प्रोटीन से संबंधित था, खानाबदोशों को आहार में कार्बोहाइड्रेट प्राप्त करने के लिए अनाज की जरूरत थी। उन्होंने लोहे के उपकरण और हथियार प्राप्त करने के महत्व को भी महसूस किया। खानाबदोश इस प्रकार मध्य एशिया के स्थायी कृषकों, कारीगरों और व्यापारियों के समूहों पर निर्भर थे जिससे वे अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते तथा जीवन स्तर में सुधार कर सकते थे। जब भी संभव हुआ खानाबदोशों ने इन स्थायी समूहों से उत्पादों को खरीदा और कुछ मामलों में अपनी जरूरतों को प्राप्त करने के लिए बल प्रयोग भी किया। बल प्रयोग स्थायी समाज के साथ उनके संघर्ष का कारण बना।

इस प्रकार, खानाबदोश जीवन के विकास का कारण जलवायु परिवर्तन तथा पशु धन की बढ़ती मांग थी, जिसने खानाबदोशों की घरेलू आवश्यकताओं को पूरा किया। इसके अलावा, घुड़सवारी और चार पहिए की गाड़ी आदि नई प्रौद्योगिकियों की शुरुआत ने मध्य एशिया में खानाबदोश जीवन के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

11.5 मध्य एशिया में खानाबदोश तथा खानाबदोश साम्राज्य

जैसा कि पिछले भाग में बताया गया है, मध्य एशिया में खानाबदोश जीवन के विकास में भौगोलिक परिस्थितियों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मध्य एशिया में पानी की कमी थी, जिसने लोगों को अपने अस्तित्व के लिए पानी की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन करने के लिए मजबूर किया। इसने पशुचारी खानाबदोशी को जन्म दिया, जिन्होंने अपना ध्यान 'अपने पशुओं के झुंड के साथ एक चरागाह से दूसरे चरागाह पर एक निश्चित बिंदु के आसपास केंद्रित किया। हालांकि वह निश्चित बिंदु भी गतिशील था; लेकिन आमतौर पर ऐसा एक निश्चित क्रम में था' (एडशीड, 1993: 15)। खानाबदोश हमेशा चरागाह भूमि की ओर स्थानांतरित होते थे।

मध्य एशिया की स्थिति खानाबदोश अर्थव्यवस्था के लिए उपयुक्त थी, 'जिसने खानाबदोशों का कृषि कार्य में कठिन परिश्रम और एक जगह पर स्थायी जीवन व्यतीत करना अनावश्यक बनाया' (हेम्बली 1969: 7)। इस प्रकार, मध्य एशिया के लोगों ने पशुचारी खानाबदोश जीवन को अपनाया, जहां वे पूरी तरह से आजीविका के लिए अपने पशुचारी झुंड पर निर्भर थे।

तीसरी सहस्राब्दी तक, मध्य एशिया के मूल निवासियों ने पशुचारी झुंड रखने शुरू कर दिए थे और पशुपालन उनका मुख्य पेशा बन गया था। यह घोड़े की पीठ पर सवारी करने वाली घुड़सवार आबादी दूसरी सहस्राब्दी बी सी ई के दौरान स्टैप्स में रहने वाले चरवाही समूहों के रूप में उभरी (पीटर, 2011: 10)। इन पशुचारी झुंडों के रखरखाव के लिए स्थानीय निवासी पलायन करने लगे। इसी समय, उन्होंने धनुष का उपयोग प्रारम्भ किया। खानाबदोशी के विकास के पहले चरण में इन समूहों ने घोड़े की सवारी की और अपनी आजीविका के लिए पशुचारी झुंड रखने शुरू किए। दूसरे चरण को लोहे के हथियारों के उपयोग, जैसे कि धनुष, द्वारा चिन्हित किया गया। इन धनुषों की मदद से वे घुड़सवारी के साथ चारों दिशाओं में वार

भी कर सकते थे। हथियारों के इस्तेमाल से इन खानाबदोशों ने स्थिर सभ्यताओं पर वर्चस्व की प्राप्ति की (गोल्डन, 2011: 11)।

इन खानाबदोशों को युद्ध रणनीति पर पूरी महारथ हासिल थी। आमतौर पर संपूर्ण जनजाति घुड़सवारी में निपुण थी और उन्होंने एक योद्धा के रूप में कौशल सिद्ध कर लिया था। इसके विपरीत एक जगह बसे हुए समुदायों में आमतौर पर केवल एक दर्जन प्रशिक्षित सैनिक होते थे। युद्ध में श्रेष्ठता ने, बसे हुए समूहों पर खानाबदोशों को वर्चस्व प्राप्ति में मदद की और इस प्रकार खानाबदोश आसानी से स्थिर सभ्यताओं को जीतने में सक्षम हुए। यदि प्रतिद्वंदी (बसे समूह) मजबूत लगते थे तो ऐसी स्थिति में खानाबदोश युद्धभूमि छोड़ने और भागने को प्राथमिकता देते थे। खानाबदोशों का योद्धा समाज अच्छी तरह से संगठित था और वे पानी और घास की तलाश में सुनियोजित मार्ग और चरागाहों की ओर पलायन करते थे।

खानाबदोश दूध के उत्पादों और मांस, कपड़े, आश्रय और उपकरण, जो मुख्यतः पशु उत्पाद थे, पर हमेशा निर्वाह करने में सक्षम थे। वास्तविक खानाबदोश समूह वे थे जो खेती नहीं करते थे और कृषि उत्पादों के लिए अपने स्थिर (sedentary) पड़ोसियों पर निर्भर थे। वे कृषि उत्पादों और विलासिता की वस्तुएं स्थिर समाजों से प्राप्त करते थे। बदले में वे उन समाजों को सामान (पशुओं की त्वचा से बने सामानों को जो खानाबदोशों द्वारा बनाए गए थे) तथा सेवाएं प्रदान करते थे। स्थिर लोगों ने हथियार, गहने, फैशन और परंपरा में खानाबदोशों का अनुकरण किया।

पशुचारी खानाबदोश स्थिर खेती पर निर्भर थे। मध्य एशियाई खानाबदोश विभिन्न जानवरों को पालते थे, हालांकि घोड़े उनकी धन-सम्पत्ति का प्राथमिक प्रतीक थे तथा जीवन का केंद्र बिंदु थे। बैकविद (2011) की टिप्पणी के अनुसार खानाबदोशों ने स्थिर संस्कृतियों के साथ शांतिपूर्ण व्यापार के माध्यम से अपनी विलासिता की अधिकतर वस्तुओं को हासिल किया। लेकिन स्थिर लोगों ने इस व्यापार प्रणाली में अगर कोई भी बाधा खड़ी की तो खानाबदोश उग्र हो जाते थे और आमतौर पर उनके क्षेत्रों को लूट लेते थे। खानाबदोश जनजातियों को आवश्यक अनाज, हथियार, उपकरण और विलासिता के वस्त्रों की आवश्यकता होती थी। इसी तरह स्थिर लोगों को मांस, ऊन, परिवहन के जानवर, फर, चमड़ा और खानाबदोश समूहों से सुरक्षा की आवश्यकता थी।

खानाबदोश हमेशा लड़ने के लिए तैयार रहते थे और किसी भी स्तर पर अगर वे खुद को असुरक्षित पाते थे तो वे स्थिर क्षेत्रों को लूट लेते थे। दूसरी ओर यदि स्थिर लोगों ने खानाबदोशों को हरा दिया तो वह जीत की एवज में कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाते थे। यही कारण था कि खानाबदोश हजारों सालों तक लड़ाई में जीते नहीं जा सके, उन्होंने लूटमार की और स्थिर समाजों पर अपना वर्चस्व बनाया। उनका रिश्ता संक्षेप में बैकविद द्वारा समझाया गया है जो कहते हैं कि, 'नखलिस्तान (स्थिर आबादी) को सरकार और संरक्षण की जरूरत थीः स्टैप्स के खानाबदोश दोनों प्रदान कर सकते थे। स्टैप्स क्षेत्र में प्रशासन और शिक्षा का अभाव थाः जबकि नखलिस्तान में दोनों थे' (बैकविद, 2011: 25)।

इस प्रकार, खानाबदोश साम्राज्य, स्थिर बसे लोगों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के बाद स्टैप्स के खानाबदोशों द्वारा स्थापित किए गए। जब इन खानाबदोश समूहों को एक से अधिक संख्या से विभाजित किया गया, तो उनमें कभी भी स्टैप्स की स्थिर कृषक बस्तियों के खिलाफ खड़े होने की शक्ति नहीं थी, लेकिन जब वे एक ही समूह में एकजुट हुए तो बसे हुए साम्राज्यों के सबसे प्रभावी दुश्मन बन गए (बारफील्ड, 2001: 12)। खानाबदोश साम्राज्यों का निर्माण मध्य एशिया में तीन चरणों में विकसित हुआ। प्रथम बिना किसी शक्तिशाली लीडर के कुलों के कबीलाई संगठन के रूप में। चरागाह सुविधाएं प्राप्त करने के लिए खानाबदोश समूहों में आमतौर पर 4 से 5 परिवार एक साथ डेरा डालते थे, जो एक साथ भ्रमण करते थे। दूसरा

चरण जनजातियों और मुखिया तंत्र के विकास से संबंधित है। मुखिया तंत्रों ने जनजातीय समूहों के प्रमुख के रूप में काम किया। बाद में इन सभी छोटे खानाबदोश समूहों ने एक मजबूत खानाबदोश समूह की सर्वोच्चता स्वीकार कर ली, जिसने कबीलाई संघ (विभिन्न कबीलों का समूह) के गठन का नेतृत्व किया। तीसरे चरण में, इन मुखिया तंत्रों ने स्थिर सभ्यता को पराजित करने के बाद, खानाबदोश साम्राज्यों का गठन किया (क्रेदिन, 2002: 370)। इस कबीलाई एकीकरण में लगभग सभी कबीलाई समूहों के सदस्य शक्तिशाली सैन्य पुरुष थे और इन क्षेत्रों में हमलों में विशेषज्ञ थे। इस प्रकार, इन खानाबदोश समूहों के लिए स्टैप्स के स्थिर बसे हुए समाजों पर हमला करना बहुत आसान था। इसके अलावा, घोड़ों के उपयोग ने उन्हें तीव्रगति से चलने और अपने दुश्मन पर हमला करने में काफी सशक्त बनाया। खानाबदोश समूहों की कुछ विशेषताएं थीं, जिसके कारण वे एक एकीकृत साम्राज्य स्थापित करने में सक्षम हुए। सर्वप्रथम, ये खानाबदोश समूह आत्मनिर्भर, और स्वायत्त थे तथा कबीलाई समुदाय के भीतर एकता का मजबूत बंधन था। दूसरे, सब चरवाहे आर्थिक रूप से स्वतंत्र और व्यक्तिगत रूप से मुक्त थे। इन विशेषताओं ने कबीलाई समूहों को उनकी शक्ति बढ़ाने और खानाबदोश साम्राज्य की स्थापना में मदद की। अतः खानाबदोश साम्राज्यों को इस प्रकार वर्णित कर सकते हैं, 'खानाबदोश साम्राज्य सैन्य पदानुक्रम पर आधारित था जिसका विस्तृत क्षेत्र पर कब्जा था और जो अपने आसपास के क्षेत्रों का शोषण किया करता था, सामान्यतः शोषण के बाहरी रूपों में (डकैती, युद्ध और क्षतिपूर्ति, असमान व्यापार, भेंट आदि)' (क्रेदिन, 2010: 23)।

खानाबदोश साम्राज्य सर्वप्रथम अन्य खानाबदोशों को जीतने के पश्चात् उन्हें कबीलाई संगठनों में शामिल करने के साथ शुरू हुआ। बाद में सभी कुलों और समूहों को शामिल कर मजबूत कबीलाई समूह बनाया गया। वह विशेष खानाबदोश समूह जिसने दूसरों पर श्रेष्ठता हासिल कर ली थी, के द्वारा आसपास के स्थिर बसे हुए लोगों पर हमले किये गये। 'खानाबदोशों की सफलता की कुंजी सैन्य शक्ति थी, यानी घुड़सवार सेना और एक साम्राज्यी संगठन, जिसने खानाबदोश समूहों से राजस्व इकट्ठा करने के बजाय राजस्व को वितरित किया' (बारफील्ड, 2001: 13)। चूंकि खानाबदोश समूह अनपढ़ थे और उन्हें सिंचाई, व्यापार या शहरी व्यवस्था में कौशल हासिल नहीं था, वह शासन प्रबंध की सलाह के लिए पूरी तरह से स्थिर समाज पर निर्भर थे। इसके अलावा, हालांकि खानाबदोशों ने स्थिर समाज पर अपना वर्चस्व स्थापित किया, उन्होंने स्थिर समाज और जीती हुई सभ्यताओं के सामाजिक और राजनीतिक तत्वों को अपनाया।

सैनिक श्रेष्ठता ने इन खानाबदोशों को इस क्षेत्र में राजनीतिक वर्चस्व प्राप्त करने में मदद की। राजनीतिक शक्ति द्वारा खानाबदोश समूह, क्षेत्र विशेष में खानाबदोश साम्राज्य स्थापित करने में सक्षम हुए (खज़ानोव, 1994: 25)। इस प्रकार खानाबदोश एक मजबूत खानाबदोश साम्राज्य स्थापित करने में सफल हुए, क्योंकि उनकी विलक्षण सैन्य विशेषताओं में थे, घुड़सवार सेना और साम्राज्यवादी राज्य संगठन, जिसमें राजस्व खानाबदोश समूहों के बीच वितरित किया जाता था। उनके साम्राज्यवादी नेतृत्व में पहले चरण में थे सत्तारूढ़ वंश और दूसरे चरण में क्षेत्रीय प्रमुख जो कबीलियाई नेतृत्व की देखभाल करते थे और युद्ध में सेनाओं की कमान संभालते थे। संगठन के तीसरे स्तर पर स्थानीय कबीलियाई नेता थे (बारफील्ड, 2001: 14)।

सातवीं और आठवीं शताब्दी में हैफ्थलाइट्स मध्य एशिया में सबसे शक्तिशाली खानाबदोश समूह था, तथा मध्य एशिया का लगभग पूरा क्षेत्र इस समूह की सर्वोच्चता के तहत था। लेकिन 10वीं और 11वीं शताब्दी से समानिद, सेलजुक, तुर्क और ख्वारिज्म सहित कई साम्राज्य इस क्षेत्र में शक्तिशाली रूप में उभरे।

बोध प्रश्न-1

1) मध्य एशिया की उन भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने इस क्षेत्र में खानाबदोश जीवन को बढ़ावा दिया।

.....

.....

.....

.....

.....

2) खानाबदोश जीवन और पशुचारी खानाबदोश जीवन के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) मध्य एशिया में घोड़े की संस्कृति के विकास और महत्व का मूल्यांकन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4) खानाबदोश साम्राज्य की विशिष्ट विशेषताएं क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

11.6 बेदुइन (बद्दू): पश्चिम एशिया के खानाबदोश

बद्दू अरब प्रायद्वीप के चरागाहों में विस्तृत खानाबदोश समूह थे। अरब प्रायद्वीप दक्षिण पश्चिम एशिया में स्थित एक क्षेत्र है। यह सर्वाधिक सूखे और गर्म क्षेत्रों में से एक है। यह लाल सागर और फारस की खाड़ी के बीच स्थित है। इस क्षेत्र में कम वर्षा होती है और लगभग पूरा क्षेत्र रेगिस्तान है। यह क्षेत्र एक समय सहारा, जो एक रेतीली पट्टी भी है और इसमें ईरान और गोबी रेगिस्तान के क्षेत्र शामिल हैं, की प्राकृतिक निरंतरता का हिस्सा था। अरब प्रायद्वीप की उत्तरी सीमा एक काल्पनिक रेखा है 'पूर्व में लाल सागर में स्थित अल-अकाबाह की खाड़ी से लेकर यह यूफ्रेट्स तक खींची गई है' (हिट्टी, 1937: 14)। प्रायद्वीप के

दक्षिण में तिहमाह, नज्द और उत्तर मध्य पठार के सीमांत क्षेत्र हैं। हट्टी क्षेत्र ने खानाबदोश समूहों को दो भागों में विभाजित कर दिया: बद्दू और स्थायी रूप से बसे लोग। मवेशियों और ऊंटों के झुंडों को पालना बद्दू लोगों का पारंपरिक व्यवसाय था।

अरब खानाबदोश, जो बद्दू के रूप में जाने जाते हैं, ने अरब प्रायद्वीप के आंतरिक भाग, दक्षिणी सीरिया और इराक पर कब्ज़ा किया। उन्होंने परिवहन के लिए ऊंटों का प्रयोग किया क्योंकि अरब क्षेत्र पूरी तरह से रेगिस्तान है। वह आंशिक रूप से कई क्षेत्रों में बसे हुए भी थे, क्योंकि वह साल भर खेती करते थे और फिर दूसरी जगह पर चले जाते थे। भेड़ और बकरी को नवपाषाण काल से ही पश्चिम एशिया में पालतू बनाया गया था और समय के साथ उन्होंने भेड़ प्रजनन की दक्षता को सीखा और बढ़ाया। इसके लिए चरागाह क्षेत्रों की जरूरत थी और इस प्रकार बद्दू लोगों ने अपनी मवेशियों और ऊंटों के साथ, जिनको 11वीं शताब्दी बी सी ई के आसपास उन्होंने पालतू बनाया, चरागाहों की तलाश में स्थानांतरण करना शुरू कर दिया।

कून जैसे विद्वानों के अनुसार, ऊंट प्रजनक बद्दूओं का मूल उन पशु-प्रजनक लोगों से माना जाता है जिन्हें हधरामौत के गारा[6] के नाम से जाना जाता है। वे पहाड़ों में संसाधन संकट के कारण, उत्तर की ओर रेगिस्तान में पलायन के लिए मजबूर हो गए, जहां वे न तो पशु-प्रजनन ना ही कृषि पर निर्वाह कर सकते थे, अतः उन्होंने ऊंट के प्रजनन को अपनाया, जो रेगिस्तानी वातावरण के लिए अच्छी तरह से अनुकूल था। बद्दू लोगों की उत्पत्ति के बारे में दूसरी धारणा यह है कि वे हधरामौत के पर्वतीय क्षेत्र के काहतानी से विकसित हुए हो सकते हैं। काहतानी शब्द अरब प्रायद्वीप के दक्षिण क्षेत्र से उत्पन्न हुए अरबों के लिए प्रयोग किया जाता है। वह ऊंट-प्रजनक थे और कारंवा व्यापार पर उनका एकाधिकार था। काहतानी अपनी उत्पत्ति याबूब इब्न काहतान इब्न हुद से मानते हैं, जो एकेश्वरवादी पैगंबर माने जाते हैं।

पश्चिम एशिया में बद्दूओं की एक महत्वपूर्ण विशेषता स्लेब्स लोगों के एक समूह के साथ उनके संबंध थे। स्लेब्स अरब में शिकारी-संग्रहकर्ता प्रकृति की एक जनजाति से विकसित माने जाते हैं। बद्दूओं की स्लेब्स से अंतर की विशिष्ट विशेषता यह थी कि वे ऊंट या अन्य जानवरों के पशु पालन पर निर्भर नहीं थे। वे काष्ठकार, पशु शल्य चिकित्सक या व्यापारिक गतिविधियों पर निर्भर थे। स्लेब्स के शिल्प और कौशल के कारण, बद्दू अक्सर रेगिस्तान में ऊंट चराने के लिए आवश्यक उत्पाद प्राप्त करने के लिए स्लेबों पर निर्भर थे।

हालांकि, मध्य एशियाई खानाबदोशों की संस्कृति पश्चिम एशियाई खानाबदोश संस्कृति से मिलती जुलती है, लेकिन मध्य एशिया के खानाबदोश पश्चिम एशिया के खानाबदोशों से भिन्न थे। पश्चिम एशिया की तुलना में मध्य एशिया के पशुचारी खानाबदोश आत्मनिर्भर थे। मध्य एशियाई जनजातियों के बीच प्राथमिक पशु घोड़ा था और बद्दूओं में ऊंट-प्रजनन और पालन आम था। भाला, ऊंट-प्रजनन बद्दूओं का प्रधान हथियार था। अरब के खानाबदोश बालों से बने टेंटों[7] (तम्बुओं) में रहते थे, जबकि मध्य एशिया के खानाबदोश *युर्त* में रहते थे (जिसने रेगिस्तान में उन्हें एक आदर्श आश्रय प्रदान किया)।

11.7 मध्य एशिया के प्रमुख खानाबदोश समूह

खानाबदोश समूह जो मध्य एशिया में अपना साम्राज्य स्थापित करने में सक्षम थे, उनमें सीथियन, हूण, तुर्क और भारतीय-यूरोपीय समूह के तोचारी, ईरानी, यूज़्ही, वुसुन और मंगोल थे।

[6] अरब प्रायद्वीप के दक्षिण छोर का क्षेत्र।

[7] बद्दुओं द्वारा निर्मित बाल से बने टेंट, बकरी और भेड़ के बालों की ऊन द्वारा बनाए जाते हैं। बकरी और भेड़ के बाल की लड़ी बुनकर, और फिर इसे टेंट की चौड़ाई और लंबाई के अनुसार बुना जाता था।

11.7.1 सीथियन

यूरोप के उत्तर-पूर्व और काला सागर के उत्तरी तट के क्षेत्र के लिए प्राचीन यूनानियों द्वारा दिया गया नाम सीथिया था। सीथियन पहले कबीलाई समूह हैं जो काला सागर के तट पर बसे[8]। सीथियनों के बाद इस क्षेत्र पर हूणों ने कब्जा किया। यूरोप-एशिया का वह भाग जो डेन्यूब नदी और तिआन शान के पहाड़ों के मध्य स्थित है, अल्ताई पर्वत श्रृंखला के रूप में निरूपित किया गया है और जहां कांस्य युग की शुरुआत हुई, को भी सीथियनों के देश के रूप में जाना जाता था। 750 से 700 बी सी ई के बीच सिमेरियनों – एक खानाबदोश समूह, जिन्हें भारतीय-यूरोपीय मूल का माना जाता है – को दक्षिणी रूस और साइबेरिया के स्टैप्स क्षेत्र से सीथियनों, जो तुर्किस्तान और पश्चिमी एशिया से आए थे, ने बेदखल कर दिया (ग्रोसे, 1970: 6) और अपना बोलबाला स्थापित किया। सीथियन ईरान से अपनी उत्पत्ति मानते हैं और उन्होंने स्टैप्स के ईरानी प्रदेश, जिसे आज रूसी तुर्किस्तान कहते हैं, में खानाबदोश जीवन को अपनाया।

सीथिया का सबसे शक्तिशाली राजा, राजा ऐटिआस (429-339 बी सी ई) था, जिसने विभिन्न जनजातीय समुदायों को एकजुट कर अपना शासन स्थापित किया। सीथियनों ने दक्षिण रूस और क्रीमिया अर्थात् युक्रेन में (क्रीमिया प्रायद्वीप, काला सागर और आज़ोव सागर के मध्य स्थित है), एक मजबूत साम्राज्य की स्थापना की। यह साम्राज्य 5वीं शताब्दी बी सी ई से दूसरी शताब्दी बी सी ई तक अस्तित्व में रहा।

सीथियन पुरुषों को दाढ़ी पसंद करने के लिए जाना जाता है। वह अंगरखे और ढीली पतलूनें, नुकीली टोपी के साथ पहनते थे जो कि उच्च दबाव वाली मैदानी हवाओं से उनके कानों की रक्षा करती थीं। घोड़े उनके साथी और धनुष उनके प्राथमिक हथियार थे। सीथियनों के अपने कोई मकान नहीं होते थे। वे वैगनों (चार पहिए की गाड़ी जिसे घोड़ा या बैलों द्वारा खींचा जाता था) में रहते थे, जो चार पहिए की छोटी गाड़ियां थी। इन वैगनों ने उनके चलते फिरते घरों के रूप में काम किया। वे एक साथ बड़े समूह में स्थानांतरण करते थे जो कि भली-भांति संगठित थे, तथा उनकी वैगनों में सहायक भी होते थे। उनके पलायन के समय ऐसा लगता था कि पूरा शहर वैगन के साथ स्थानांतरण कर रहा है। इस प्रकार, स्टैप्स में उनके मौसमी स्थानांतरण के लिए घोड़े के अलावा सीथियनों ने गाड़ी और ढकी वैगनों का इस्तेमाल किया। वास्तव में, यह वैगन, जनजातीय समूहों के *युर्त* थे। जब जनजातीय समूह एक जगह रूकते थे तब इन वैगनों को *युर्त* के रूप में (जमीन पर स्थिर झोपड़ी) प्रयोग करते थे। उनकी सोने के रूप में पूँजी फलकों (plaques) और कालीनों, जो सीथियन कला में अद्वितीय थे और जिन्हें सुरक्षित रखा जाता था, के रूप में थी।

सीथियन जनजातियां पूर्ण स्वतंत्रता में रहती थीं। लेकिन उन्होंने एक सुव्यवस्थित 'राज्य' प्रणाली विकसित की जो कई शताब्दियों तक चली। यह 'राज्य' छः प्रमुख प्रांतों में बांटा गया था। प्रांतों को आगे *नोम* या जिलों में उप-विभाजित किया गया, जिन्हें 'नोमार्क' या राज्यपाल द्वारा संचालित किया जाता था। इस्तवान ज़िमोन्यी (2016) का विचार है कि हालांकि हमें सीथियनों के प्रांतों के बारे में कोई सबूत नहीं मिलता है, *नोम* (जिले) विभिन्न खानाबदोश समूह या जनजाति हो सकती हैं, जो सीथियनों द्वारा शामिल की गईं। वे सीथियनों की सेना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे और इन सभी जनजाति समूहों के सैन्य नेता खानाबदोश समूह के लिए भेंट इकट्ठा करते थे। सीथियन जनजाति संरचना की दृष्टि से सामंती थी।

[8] सीथियनों के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें: http://blog.britishmuseum.org/introducing-the-scythians.

750-700 बी सी ई में सीथियन तुर्गई क्षेत्र और यूराल नदी से दक्षिण रूस में स्थानांतरित हुए, जहां उन्होंने सिमेरियनों को बाहर खदेड़ दिया। सीथियन सातवीं से तीसरी शताब्दी बी सी ई तक रूसी स्टैप्स के एकछत्र स्वामी रहे। उन्होंने डर्बेंट द्वार को पार किया और असीरियन साम्राज्य के संपर्क में आए। सीथियन पड़ोसी सभ्यताओं ईरानी, यूनानी और मेसोपोटामिया, के लिए एक खतरा बन गए। वह हमेशा एकेमिनिड साम्राज्य के साथ संघर्षरत रहे। पश्चिमी सीथियनों को चौथी शताब्दी बी सी ई में मकदूनी (मेसिडोनियाई) साम्राज्य ने पराजित कर दिया और पूर्वी सीथियनों पर जिआँगनू, यूची और वुसुन ने दूसरी शताब्दी बी सी ई में हमला किया। बाद में वे दक्षिण एशिया की ओर चले गए, जहां वे भारतीय सीथियन (भारतीय सीथियन शब्द शकों के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है जो दूसरी से चौथी शताब्दी में उत्तरी और पश्चिमी एशिया के कुछ हिस्सों में स्थानांतरित हुए) के नाम से जाने गए। दूसरी शताब्दी बी सी ई में तुर्किस्तान के सीथियनों को जिआँगनू और यूची जैसे अन्य समूहों द्वारा हमलों का सामना करना पड़ा और उनका पतन हुआ। और अंत में उन्हें हूणों द्वारा, जो पश्चिम की ओर चले गये, बाहर धकेल दिया गया।

11.7.2 जिआँगनू

जिआँगनू को एशियाई हूणों के रूप में जाना जाता है जो मध्य एशिया की एक और खानाबदोश जनजाति थी, जो तृतीय शताब्दी बी सी ई से पहली शताब्दी सी ई तक मंगोलियाई पठार पर, अर्थात् आज का मंगोलिया, साइबेरिया, पश्चिमी मंचूरिया[9] और आधुनिक चीन के आंतरिक मंगोलियाई प्रांतों में रहते थे। जिआँगनू के बारे में कुछ का मानना है कि उनकी उत्पत्ति अनिश्चित है जबकि दूसरो का तर्क है कि यह समूह कई खानाबदोश समूहों, जो विभिन्न नस्लों के थे, से उत्पन्न हुए। जिआँगनू, खानाबदोशों के प्रथम एकीकृत साम्राज्य के रूप में उभरे। जिआँगनू के समय में चीन कई राज्यों (किन, झाओ, यान, की, लू, वेई, हान, चू) में विभाजित था, अतः जिआँगनुओं के लिए इन विभिन्न राज्यों को जीतना आसान था। वह लगातार चौथी और तीसरी शताब्दी बी सी ई में उत्तरी चीन पर हमले करते रहे।

खुद को इस खानाबदोश समूह से बचाने के लिए चीन के राजा चिन-शी-हवांग-ती (चिन के पहले संप्रभु सम्राट के रूप में जाना जाता है; 259-210 बी सी ई) ने चीन के बड़े हिस्सों को एक साम्राज्य में एकजुट किया और चीन में एशियाई हूणों के हमले रोकने के लिए उसने चीन की महान् दीवार का निर्माण कराया। वह ओरडून और सेंसी से एशियाई हूणों को बाहर निकालने में सफल रहा। तूमान (220-209 बी सी ई) इस जनजातीय समुदाय का सबसे शक्तिशाली शासक था, जिसने मंगोलिया के अन्य सभी खानाबदोश समूहों को एकजुट किया और उत्तरी चीन पर आक्रमण किया। उत्तरी चीन में इस चरवाहे समूह के लिए पर्याप्त चरागाह थे और उन्होंने इस क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। तूमान के बेटे माओदून (209-174 बी सी ई) ने अपने को अपने पिता से भी अधिक शक्तिशाली साबित किया। उसने 203 बी सी ई में यूज़ही को हराया। उसका पुत्र जीयु (174 बी सी ई) तुलनात्मक रूप से कमज़ोर था जिसके बाद जिआँगनू शक्ति का पतन हुआ।

जिआँगनू का राजनीतिक संगठन पूर्ण पदानुक्रम पर आधारित था, जिसमें समूह के अन्य छोटे नेताओं पर सम्राट का नियंत्रण था। पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में वहां चार राज्यपाल थे जो केंद्रीय सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करते थे। हालांकि जिआँगनू राजाओं के पास शक्ति थी, ये चारों राज्यपाल साम्राज्य का विशिष्ट हिस्सा

[9] उत्तर पूर्व एशिया का एक क्षेत्र।

थे और वह मुख्य रूप से जिआँगनू परिवार के सदस्य थे। वे राजा को और 'केंद्रीय साम्राज्य' की शासकीय संस्था को भेंट देते थे। 129 बी सी ई में चीन ने जिआँगनू पर हमला किया और जिआँगनू का मजबूत साम्राज्य दो अलग-अलग साम्राज्यों, अर्थात् पूर्वी और पश्चिमी जिआँगनू, में विभाजित हो गया। पश्चिमी जिआँगनू साम्राज्य बाद में हान (एक चीनी राजवंश; 206 बी सी ई-220 सी ई) हमले द्वारा नष्ट हो गया। हालांकि पूर्वी जिआँगनू ने 31 बी सी ई तक सत्ता को बरकरार रखा, और 18 बी सी ई तक उन्होंने मंचूरिया से काशगर तक एक विशाल क्षेत्र पर अपनी सत्ता को स्थापित किया। अंततः चीन के हान शासकों ने उन्हें 216 सी ई में पराजित किया। परिणामस्वरूप, जिआँगनू ने यूची जनजाति को ज़िन्जियांग और गान्सू क्षेत्र से बाहर निकाल दिया। इस कारण यूची पूर्वी कजाकिस्तान की ओर चले गए। यूची महान् कुषाण साम्राज्य के संस्थापक थे जो उत्तर में तारिम बेसिन से दक्षिण में भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र तक फैला था।

कुषाण साम्राज्य को यूची जनजाति ने (135 बी सी ई-375 सी ई) उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान के बैक्ट्रिया क्षेत्र में स्थापित किया। यूची दुनहुआंगी क्षेत्र में रह रहे थे, अर्थात् आधुनिक चीनी प्रांत गांसू में। वहां उनको जिआँगनू ने हरा दिया और दक्षिण पश्चिम में दायुआन से दूर जाने के लिए मजबूर किया, वहां उन्होंने डेक्सिया के लोगों पर विजय प्राप्त की और ईरानी, अफ़गान और भारतीय इतिहास में कुषाण के रूप में जाने गए।

11.7.3 हूण

हूण एक खानाबदोश समूह था जो चौथी और पांचवीं शताब्दी सी ई में प्रमुखता से उभरे। उनका मूल स्थान अज्ञात है लेकिन यह माना जाता है कि वे कहीं अल्ताई पहाड़ों और कैस्पियन सागर के पूर्वी छोर के बीच उत्पन्न हुए। हूण अश्वारोही, मांस खाने वाले, और जूते पहनने वाले योद्धा थे, जिन्होंने लगातार चीन पर हमला किया[10]। हूण घोड़े, ऊंट, भेड़ और गधे, तथा अन्य दूसरे जानवरों को अपने पास रखते थे। त्यानशान और अल्ताई के सीथियन क्षेत्र (अब चीन और सोवियत संघ के कब्जे में) को हूणों ने अपने चरागाहों में शामिल किया। वे घुड़सवारी में कुशल थे और उनकी योद्धा प्रकृति ने उन्हें यूरोप में एक उल्लेखनीय पकड़ प्रदान की।

चीन में इस प्रमुख साम्राज्य को ह्स्यूंग-नू के रूप में जाना जाता है, रोमन और भारतीयों ने उन्हें हूण के रूप में संबोधित किया। हूण तीसरी सदी सी ई में एक मजबूत समूह बन गया। तीसरी सदी सी ई के अंत तक पशु-प्रजनन, लोहे के उपकरणों के विकास, और अपने सैन्य कौशल को मजबूत बनाने से हूणों की समृद्धि बढ़ी और यह एक मजबूत और शक्तिशाली ताकत के रूप में उभरे।

454 सी ई तक हूण अकेले चरवाहे समूह थे जो एक स्थान से दूसरे स्थान बिना किसी मजबूत राजा के घूमते रहते थे। 432 सी ई में हूण मुखिया रूआ या रुगिला (मृत्यु 434 सी ई) ने हूण समूहों को एकजुट किया और कबीले को मजबूत बनाया। 376 से 476 सी ई के दौरान रोमन साम्राज्य के पतन के पीछे हूण हमले प्राथमिक कारण थे। रूआ की मृत्यु के बाद उसके दो भतीजे ब्लैडा (लगभग 390-434 सी ई) और एटिला (लगभग 434-453 सी ई) शासक बने। उन्होंने पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ शांति संधि की, जिसमें रोमन सम्राट अपने साम्राज्य को हूणों के हमलों से बचाने की एवज में उन्हें पूर्व में दिए जाने वाले अनुदान से दोगुना अनुदान देने के लिए सहमत हुआ।

[10] हूण हमलों और मानचित्र पर अधिक जानकारी के लिए देखें: https://www.enchantedlearning.com/history/asia/huns/

मानचित्र 11.2 : अटीला के साम्राज्य का विस्तार
साभार: स्लोवेंसकी वॉक
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Huns450.png

मध्य एशिया के खानाबदोश समूहों की एक मुख्य विशेषता थी कि वह हमेशा अपने स्थायी बसे हुए समकक्षों को, उनके बर्बर हमलों से अपने राज्य की रक्षा करने के लिए, अनुदान (सोना या अन्य आवश्यक चीजों) देने के लिए मजबूर करते थे। उन्होंने इसी तर्ज पर चीन में भी अपना वर्चस्व स्थापित किया। हूण चीन को लूटते थे और उन्होंने दक्षिण में उनके शहरों और गांवों को काफी लूटा। हूण शक्ति उनके राजा एटिला के तहत 450 सी ई में अपने चरम पर पहुंच गई। एटिला के बाद हूण साम्राज्य तेजी से विघटित हुआ, उसके बेटे साम्राज्य को संगठित रखने में सक्षम नहीं थे।

कबीलाई प्रशासन की प्रकृति लोकतांत्रिक थी और मुखिया के पास खुद को विशेष दर्जा देने के कोई अधिकार नहीं थे। हूण बच्चों को पशु चराने, घुड़सवारी करने और उनके छोटे धनुषों से चूहे, सियार और खरगोशों का वध करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। हूण अपने भोजन के लिये दूध और मांस पर निर्भर रहते थे। उनके कपड़े चमड़े या फैल्ट के बने होते थे। योद्धा कबीले के सबसे आदरणीय सदस्य होते थे और वे अपनी पसंद का भोजन प्राप्त करते थे।

हूण सुदूर पूर्व के इतिहास में भी महत्व रखते हैं। पांचवी शताब्दी सी ई से उन्होंने तुर्किस्तान पर कब्ज़ा कर लिया, तुर्किस्तान पर कब्ज़े के बाद हूण ईरानियों के सासानिद साम्राज्य के संपर्क में आए। तुर्किस्तान पर आधिपत्य ईरानियों, हूण और हैफ्थेलाइट्स के मध्य संघर्ष का कारण बना। शक्ति की इस लड़ाई में शक्तिशाली सासानिद सम्राट पेरोज प्रथम 484 सी ई में मारा गया। इस जीत के बाद हूणों ने ईरानियों को अपने क्षेत्र को हूणों के हमले से सुरक्षित रखने की एवज में एक भारी भेंट देने के लिए मजबूर किया।

इसके बाद हूण दूर-दूर तक फैल गए और उनके विस्तार के आधार पर वह यूरेशिया के सबसे शक्तिशाली कबीले के रूप में उभरे। उनके वंशज समूहों में से एक, मैगियार, आज भी आधुनिक हंगरी में पाए जाते हैं।

चित्र 11.2 : एलन के साथ लड़ाई में हूण
साभारः पीटर जोहान नेपोमुक गीगर (1805-1880)
स्रोतः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Hunnen.jpg

हूणों के विजयी दौर को गेपिदों[11] द्वारा प्रतिबंधित किया गया जो कि एक बहादुर योद्धा थे और हूणों की तरह घुड़सवारी करते हुए तीर चला सकते थे। गेपिदिया राजा आदेरिक ने 454 सी ई में मेदाओ की लड़ाई में हूणों को हरा दिया।

11.7.4 वुसुन

मैदान के अधिकांश अन्य खानाबदोश समूहों की भांति वुसुन खानाबदोश चरवाहे भी पानी की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान की तरफ घूमते थे। उनके मूल के बारे में स्पष्टतः पता नहीं चलता, लेकिन ऐसा माना जाता है कि वह मूल रूप से यूरोप से थे, तथा वे सीथियनों की शाखा माने जाते हैं। वे किलियन पर्वत (चीन का वर्तमान किंघाई प्रांत) और दुनहुंग (गांसू, चीन के उत्तर पश्चिम में स्थित है) के मध्य में रहते थे। उन्होंने कारपेथियन से कोकोनोर तक फैले क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। वुसुन के इतिहास को कांस्य युग से खोजा जा सकता है। वुसुन क्षेत्र फरगना घाटी से घिरा हुआ था, जो घोड़े की नस्ल के लिए प्रसिद्ध था और सिल्क मार्ग होने के कारण अत्यंत समृद्ध था। इस प्रकार, दोनों जिआँगनू और चीनी, वुसुन के साथ संबंध रखने में रुचि रखते थे। 80 बी सी ई में जिआँगनू ने वुसुन पर हमला किया और वुसुन को हरा दिया। 72 बी सी ई में वुसुन के मुखिया कुनमी ने जवाबी कार्यवाही के लिए हान से सहायता मांगी और जिआँगनू को हरा दिया। इसने वुसुन की शक्ति को मजबूत किया और कुनमी ने यारकंद पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

पश्चिम में यूज़्ही ने वुसुन के साथ युद्ध किया। यूज़्ही ने वुसुन राजा नंदौमी (मृ. 173 बी सी ई) को मार वुसुम को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। 162 बी सी ई में जिआँगनू ने यूज़्ही को पराजित किया और उन्होंने यूज़्ही को पश्चिम में स्थानांतरित होने के लिए मजबूर किया। लाइजिओमी, वुसुन राजकुमार, युद्ध में बच गया और उसे जिआँगनू के राजा ने गोद ले

[11] रोमानियाा, हंगरी और सर्बिया के क्षेत्र में स्थित पूर्वी जर्मन जनजाति।

लिया। इससे हमें यह पता चलता है कि जिआँगनू और वुसुन के सौहार्दपूर्ण संबंध थे। हालांकि वे दूसरी और तीसरी सदी सी ई में सबसे शक्तिशाली बन गए, यह काल हूण शक्ति के प्रसार की अवधि से मेल खाता है और यह वह समय था जब जिआँगनू और यूज़्ही में एक लंबे समय तक युद्ध चलता रहा।

जब वुसुन राजकुमार लाइजिओमी शक्तिशाली हुआ तो उसने जिआँगनू की सेना को लेकर यूज़्ही पर इली घाटी में 133-132 बी सी ई में हमला कर दिया। वुसुन राजकुमार ने यूज़्ही को हराया (133 बी सी ई) और उन्हें सोगदिया की ओर स्थानांतरित होने के लिए मजबूर कर दिया। सोगदिया से यूज़्ही का विस्तार दक्षिण एशिया में हुआ। इस जीत ने वुसुन की शक्ति को बढ़ाया। उन्होंने बहुत बड़ा क्षेत्र अपने स्वामित्व में ले लिया और सिल्क मार्ग को नियंत्रित किया। पहला खानाबदोश शाही नगर चीगू, सिल्क मार्ग पर वुसुन द्वारा स्थापित किया गया। वे हान के निकट सहयोगी थे और उनके चीनी हान के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध थे और उस क्षेत्र में घोड़ों के मुख्य आपूर्तिकर्ता थे। 115 बी सी ई में हान शासक ज़ान कियान ने वुसुन शासक लाइजिओमी के यहां राजदूत भेजा और हान राजकुमारी ज़िजुन की शादी के लिए पेशकश की। चीन में हान वंश के पतन के बाद वुसुन शक्ति का भी पतन हुआ और धीरे-धीरे वह मध्य एशिया के इतिहास से गायब हो गए, शायद वे बाद में हैफ्थेलाइट्स में सम्मिलित कर लिए गए। चीनी साक्ष्यों में वुसुन का अंतिम उल्लेख 436 सी ई का है। उस वक्त वे चीन के पामीर पहाड़ों में बसे हुए थे, जब चीनी दूत को वुसुन भेजा गया और उन्होंने भी प्रतिउत्तर में मैत्री का हाथ बढ़ाया।

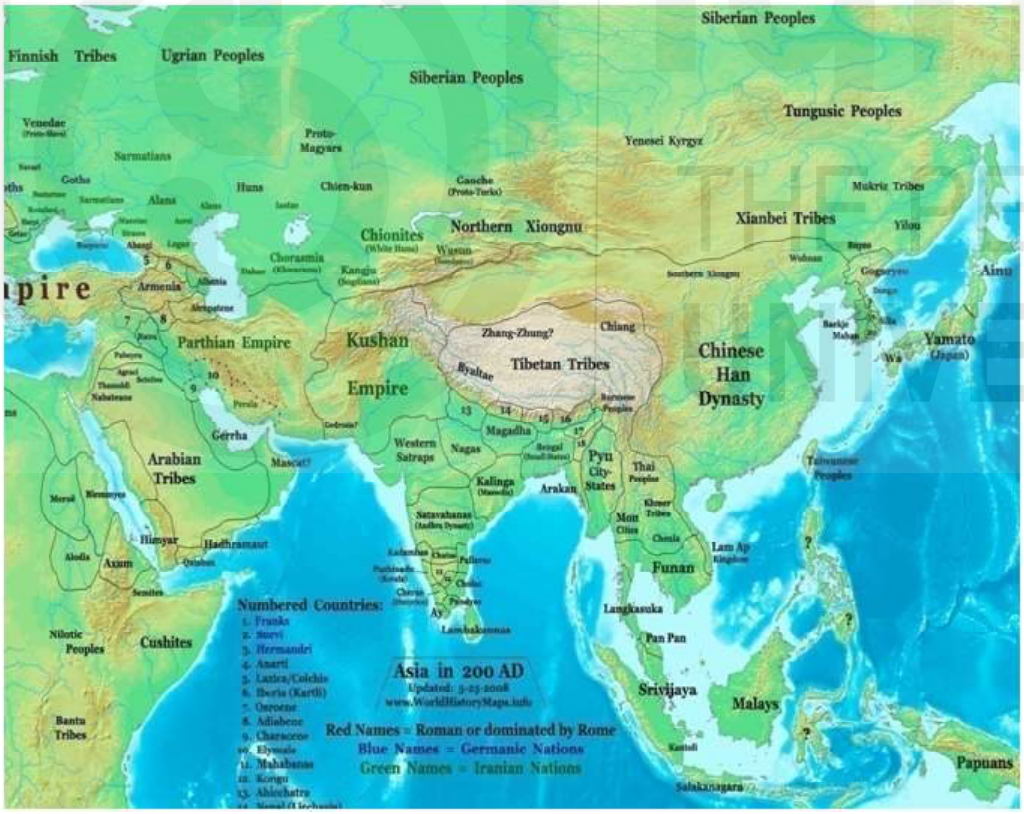

मानचित्र 11.3 : 200 सी ई में मध्य एशिया की जनजातियां

साभारः थॉमस ए लेसमैन

स्रोतः विकीमीडिया कॉमनस (https://commons.wikimedia.org/wiki/file:Asia_200ad.jpg)

11.7.5 तुर्क

लगभग 500 से 1500 सी ई के काल में खानाबदोश समूह लगातार युद्धरत रहते थे। इस समय एक मज़बूत खानाबदोश समूह, तुर्क उभरा। तुर्क एक छोटी सी घुड़सवार जनजाति,

जिसका उद्‌गम अल्ताई पहाड़ों में हुआ था, के वंशज माने जाते हैं। अल्ताई पर्वत क्षेत्र गोबी रेगिस्तान और साइबेरियाई मैदानों के बीच स्थित है। 'तुर्क' शब्द चीनी शब्द 'तु-किन' से लिया गया है जिसका अर्थ 'सशक्त' और 'मजबूत' है, अतः शक्तिशाली लोगों की ओर संकेत करता है। बाद में इस शब्द का प्रयोग तुर्क जनजातियों के समूह के लिए किया जाने लगा (रौदिक, 2007: 24)। अल्ताई तुर्कों को इस प्रकार बहादुर और शक्तिशाली माना गया, जिन्हें बूमिन द्वारा एकजुट किया गया।

बूमिन (551-552 सी ई) इस जनजातीय समूह का सबसे शक्तिशाली मुखिया था जिसने मंगोलियाई स्टैप्स की सभी जनजातियों को एकीकृत कर इस क्षेत्र में एक मजबूत तुर्की साम्राज्य की स्थापना की। उनके दूरदराज के अधिकार क्षेत्र के साथ तुर्कों ने एक मजबूत तुर्की साम्राज्य स्थापित किया जो लगभग दो शताब्दियों के लिए मध्य एशिया में प्रमुख शक्ति बना रहा (रौदिक, 2007 : 37)। तुर्कों ने छठी शताब्दी सी ई में अपना साम्राज्य स्थापित किया जो वर्तमान मंगोलिया से चीन की उत्तरी सीमा में काला सागर तक फैला हुआ था और उन्होंने चीन और पश्चिम के बीच रेशम व्यापार मार्ग को नियंत्रित किया। यह जनजातीय समूह रेशम मार्ग के नियंत्रण से आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो गया और उन्होंने सुदृढ़ आर्थिक स्थिति से मध्य एशिया के क्षेत्र में अपना स्थाई निवास बनाया। वह चीनी सीमा पर हमला और लूट किया करते थे। चीन ने उन्हें उपहार भेजकर और चीन की राजकुमारियों को तुर्की कुलीनों को शादी में देकर उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश की।

तुर्क पहला मध्य एशियाई समूह हैं जिन्होंने लिखित साक्ष्य छोड़े। वे तुर्की भाषा को बोलचाल में इस्तेमाल करते थे। सबसे पुराना मौजूदा तुर्की लिखित साक्ष्य मंगोलिया में और आर्खोन नदी के पास की कब्रगाहों के पत्थरों पर सातवीं शताब्दी के अभिलेखों से मिलता है। आर्खोन शिलालेख एक पशुचारी खानाबदोश राज्य के आंतरिक तनावों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। यह वह समय था जब उनकी शक्ति चरम सीमा पर थी, और उनका प्रभुत्व चीन की सीमा से बाइजेंटाइन तक फैला हुआ था।

निवार (581-587 सी ई) के अधीन तुर्को के बीच एक दरार आ गई और वह पूर्वी और पश्चिमी तुर्क में विभाजित हो गए। पश्चिमी तुर्की साम्राज्य विभिन्न गुटों के बीच पैदा हुए आंतरिक संघर्ष के कारण नष्ट हो गया। आर्खोन शिलालेख इस प्रकार की आंतरिक कलह का कारण वर्णित करता है:

> क्योंकि कुलीनों और आम तुर्क के बीच मतभेद हुए क्योकि चीनियों की धोखाधड़ी और धूर्तता ने छोटे को बड़े भाई, कुलीन को आम के खिलाफ कर दिया, यही तुर्कों के साम्राज्य, जो उनका अपना था, के विघटन का कारण था, और *कघान* के सर्वनाश का कारण भी था, जो उनका अपना *कघान* था।
>
> **(हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन ऑफ सेंट्रल एशिया, भाग-III, 1994: 331)**

द्वितीय तुर्की साम्राज्य 630 सी ई में ऑर्डोस और शांसी के उत्तर में पूर्वी तुर्की जनजातियों द्वारा स्थापित किया गया था। 681 सी ई तक साम्राज्य अपनी पूर्ण चरम सीमा पर नहीं पहुंचा था। 687 सी ई में इल्तरिश (682-691 सी ई) ने मध्य और उत्तरी मंगोलिया पर विजय प्राप्त की। इल्तरिश ने *कघान* की पारंपरिक संरचना को स्थापित किया जिसमें *कघान* ने राज्य को नियंत्रित किया और वे जनजातीय समूह के मुखिया के रूप में उभरे। किरगिज, तुर्कों का एक खानाबदोश समूह, 840 सी ई तक सत्ता में बना रहा।

तुर्क के चरागाह तू-चिन पर्वत पर स्थित थे। वह हर साल अपने चरागाहों का दौरा करते थे और शुक्ल पक्ष के चंद्रमा के समय बलि देते थे। उनका पंसदीदा पेय *कुमिस* था, जो घोड़ी के दूध से तैयार किण्वित (fermented) शराब थी। तुर्की खानाबदोश उत्तराधिकारी को चुनने के लिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया का पालन करते थे।

अपने इतिहास के प्रारंभिक काल में, इस तुर्की खानाबदोश समूह ने बौद्ध धर्म[12] को अपनाया लेकिन बाद में उन्होंने इस्लाम को अपनाया। इन धर्मों को अपनाने के बावजूद तुर्कों ने अपने अंत्येष्टि संस्कारों, जिसमें मृत आदमी के तंबू के सामने मृतक शरीर को रखकर जहां उन बच्चों, पोते और अन्य भाई-बंधुओं में से हर एक आकर घोड़ा या एक भेड़ भेंट करता था, को नहीं छोड़ा। इस रीति के हिस्से के रूप में दुख व्यक्त करने के लिए, चाकू द्वारा व्यक्ति विशेष अपने चेहरे को काटता था जिससे आंसुओं में खून मिले। कब्र पर पत्थर रखकर प्रतीक के रूप में शोक व्यक्त किया जाता था और पत्थर की संख्या मृत व्यक्ति द्वारा मारे गए दुश्मनों की संख्या को इंगित करती थी।

इस प्रकार, तुर्कों ने मंचूरिया से काला सागर तक मध्य एशिया का प्रथम अंतर-महाद्वीपीय साम्राज्य बनाया। बाद में वे मंगोल साम्राज्य में शामिल कर लिए गए।

11.7.6 मंगोल

मंगोल एक जनजातीय संघ था जो 12वीं शताब्दी के अंत में मध्य एशिया के स्टैप्स क्षेत्र में बसे हुए थे। इस जनजातीय संघ में कुछ स्टैप्स के खानाबदोश थे, जबकि दूसरे शिकार और मछली पकड़ते थे। वह विभिन्न वंशों और कुलों में संगठित थे, लेकिन वे एक जनजातीय समूह के रूप में एकजुट थे। अता मलिक जुवैनी (1226-1283 सी ई)[13] अपने ग्रंथ में वर्णन करता है कि चंगेज खान (1206-1227 सी ई)[14] के उदय से पहले मंगोल एक शासक रहित, विभाजित और लगातार एक दूसरे के साथ लड़ाई में व्यस्त रहते थे। 'उनमें से कुछ ने डकैती और हिंसा और अनैतिकता तथा व्यभिचार को मर्दानगी और श्रेष्ठ माना'। वह 'कुत्तों' और चूहों' की खाल से तैयार वस्त्र पहनते थे, जो 'अन्य मृत वस्तुओं' और *कुमिस* के साथ उनके आहार का हिस्सा थे (गोल्डन, 2011: 77)।

मंगोल मंगोलिया में ओनॉन और केरूलेन नदियों के आस-पास अपने पशु चराते थे। मंगोलिया में उस समय अनेक कबीलाई समूह बिखरे हुए थे। मंगोलों के उत्तर में *नेमन* (जनजातीय समूह) थे जो साइबेरिया में इरतिश नदी तक फैले थे। सबसे महत्वपूर्ण जनजातियां मंगोलिया के दक्षिण में *तातार* (जनजाति समूह) और *करायत* पश्चिम में थे। *करायत* तथा *नेमन* के उत्तर में अन्य दूसरी जनजातियां थीं जिनमें से *ओइरोत* (या *ओइराड*) और मर्किट (या *मर्गिद*) बाइकाल क्षेत्र के दक्षिण में बिखरे हुए थे (गोल्डन, 2011: 77)। इन सभी जनजातियों (*तातार, करायत, नेमन, ओइरोत* और *मर्किट*) को सामूहिक रूप से मंगोल खान ने एकीकरण के बाद 'मंगोलों' के रूप में नामित कर दिया। *खान* जनजातीय सरदारों की उपाधि थी और सभी जनजातियों का नेता *खाकान* कहलाता था (हेंबली, 1969: 87)। चंगेज खान द्वारा 1206 सी ई में मंगोलों और तुर्कों के एकीकरण के बाद एक संगठित मंगोल कबीले का निर्माण किया गया।

मंगोलों का एकीकरण चंगेज खान से पहले शुरू हो गया था। कैदू, जो मंगोलो का एक कबीलाई नेता था, 11वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 12वीं सदी के पूर्वार्द्ध में पहला सरदार था जिसने मंगोलो के नेतृत्व में सभी जनजातीय समूहों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। कैदू का पोता काबुल (शायद 12वीं सदी के पूर्वार्द्ध) पहला खान था जिसने विभिन्न मंगोल जनजातियों पर शासन किया था (गोल्डन, 2011: 77)।

> 12वीं सदी के पूर्वार्द्ध में काबुल खान के तहत तीन नदी क्षेत्रों के मंगोल पर्याप्त शक्तिशाली हो गए जिन्हें एक प्रकार के राज्य-संघ *उलुस* में एकजुट किया गया।
>
> **(असिमोर, 1999: 251)**

[12] तघपर (572-581 सी ई) ने बौद्ध धर्म अपनाया थ। तघपर के भाई निवार (581-587 सी ई) ने भी बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया।

[13] एक फारसी इतिहासकार जिसने मंगोल साम्राज्य का वृत्तांत लिखा था।

[14] तुर्की में गेंगीज़ खान के रूप में उल्लेखित।

इस प्रकार, काबुल ने *उलूस* के रूप में जनजातियों का एकीकरण करना शुरू किया। तातार और मंगोलों के लगातार युद्ध के कारण यह एकीकरण 12वीं सदी के उत्तरार्ध में विघटित हो गया। मंगोलों और तातारों के बीच यह संघर्ष चीन के जिन राजवंश के शासकों के हस्तक्षेप के कारण हुए। चीनी शासक जनजातीय समूहों के एकीकरण के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि वह हमेशा चीन पर उनके हमले के प्रति आशंकित रहते थे। अतः चीन के जिन राजवंश (1115-1234 सी ई) के शासक मंगोलियाई समूह के कबीलाई संघ को विभाजित करने में प्रयत्नरत रहे, और अंततः तातार को अपने पक्ष में करने में सक्षम हो गए। तातारों (मंगोलिया का शक्तिशाली जनजातीय समूह) ने अंभाघई खान – काबुल के उत्तराधिकारी, को पकड़ने के लिए जिन की मदद की, जिसे 1160 सी ई में चीनियों ने मार डाला। इससे मंगोलों और तातारों के बीच युद्ध शुरू हुआ (गोल्डन, 2011: 77)।

मंगोलिया के जनजातीय समूहों के बीच संघर्ष की इस पृष्ठभूमि के तहत तेमुजिन/चंगेज खान (1206-1227 सी ई) मंगोलों के कुलीन परिवार में 1167 सी ई में पैदा हुआ। उसने अंतर-जनजातीय युद्धों को खत्म किया और तत्पश्चात् उसके बाद मंगोल क्षेत्र का विस्तार मध्य एशिया से आगे तक किया। मंगोलिया की *कुरूलताई* (जनजातीय परिषद) ने 1206 में तेमुजिन को अपने नेता के रूप में नियुक्त किया और गेंगीज खान (सार्वभौमिक नेता) का नाम दिया। उसने जिन वंश के चीन के शासकों को 1211 में अपने अधीन कर लिया। उसके बाद उसने ईरान (1223), तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान पर हमला किया। उसने उत्तरी चीन के तनगुट के जनजातीय संघ (1226) को भी हराया। मंगोल साम्राज्य मध्य एशियाई इतिहास में सबसे बड़ा खानाबदोश साम्राज्य था। यह पहला खानाबदोश साम्राज्य था जिसने जनजातियों को एक हस्ती के रूप में शामिल किया (सभी मंगोल जनजातियों का एकीकरण) और जिसका विस्तार कई क्षेत्रों में था (चीन और मध्य एशिया के भाग)। 1206 में इस प्रकार चंगेज खान द्वारा स्थापित मंगोल साम्राज्य दक्षिण पूर्व एशिया से पूर्वी यूरोप तक फैला था। अपना क्षेत्रीय वर्चस्व स्थापित करने के बाद चंगेज खान ने एक कानूनी संहिता अपनी जनजाति के लिए बनाई जिसे *यासा* के रूप में जाना जाता है। *यासा* अनिवार्य आदेशों का संग्रह था जिसे समुदाय के सदस्यों को बिना प्रश्नचिन्ह के पालन करना होता था। यह मंगोल रीति-रिवाजों और जीवन के आचार-विचार को भी परिलक्षित करता है।

तेरहवीं शताब्दी में मंगोल वर्चस्व खानाबदोश समूहों की दुनिया के स्थायी बसे हुए समाज़ों पर एक महत्वपूर्ण जीत थी। मंगोलों ने मध्य एशिया के बड़े क्षेत्र पर आगे एक और शताब्दी तक और उनके तुर्की-भाषी वंशजों ने इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व आगे आने वाली डेढ़ शताब्दियों तक किया।

बोध प्रश्न-2

1) बद्दू कौन थे?

.....

.....

.....

.....

.....

2) सीथियनों की प्रशासनिक व्यवस्था का 50 शब्दों में संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) हूणों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी 50 शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) किन परिस्थितियों में कुछ खानाबदोश समूह साम्राज्य स्थापित करने में सक्षम हुए?

.....

.....

.....

.....

.....

5) गेंगीज खान कौन था? संक्षेप में उसके क्षेत्रीय विजय अभियानों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

11.8 राजनीतिक संरचना

खानाबदोश (जिआँगनू, तुर्क और मंगोल) के सबसे बड़े संघ मध्य एशिया के स्टैप्स क्षेत्र में उभरे। जनजातीय नेता के मुखिया की राजनीतिक सत्ता के बारे में जानकारी जिआँगनू राजा के चीन के सम्राट वेंती (169-56 बी सी ई) को लिखे गए पत्राचार से मिलती है: 'मैंने सभी तातार जनजातियों, जो घुड़सवारी के वक्त धनुष चला सकते थे, को एकजुट किया। मैंने यूची तुर्बुगताइ, लान्नोर को नष्ट कर दिया एवं अन्य छब्बीस पड़ोसी राज्यों को अपने नियंत्रण में ले लिया। और यदि आप नहीं चाहते हैं कि हंग-नू महान् दीवार को पार करे तो आपको चीनियों को दीवार के पास आने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। यह भी देखें कि मेरे दूत सुरक्षित रूप से वापस आयें और उन्हें एक बंदी के रूप में नहीं रखा जाए' (सांकृत्यायन, 1964: 19)। यह खानाबदोश लगातार चीन में बसे स्थायी साम्राज्य के साथ संघर्षरत थे। जिआँगनू और चीनी सतारूढ़ वंश किंन/हान; खानाबदोश तुर्क और चीन के सुइ/तांग; खानाबदोश मंगोल और सांग शासकों के बीच संघर्ष होते रहते थे। जब ये समूह बिखरे हुए थे वह चीन

के शक्तिशाली साम्राज्य के खिलाफ खड़े नहीं हो सकते थे। लेकिन जब ये समूह एक शक्तिशाली नेता के अधीन एकजुट होते थे तो वह हमेशा चीन के सबसे बड़े दुश्मन के रूप में खड़े हुए। यह उनके मजबूत राजनीतिक संगठन के कारण था।

स्टैप्स के इन खानाबदोश समूहों ने एक सुव्यवस्थित राजनीतिक प्रणाली की स्थापना की। खानाबदोश समूहों के राजनीतिक संगठन की संरचना के तीन बुनियादी स्तर थे, प्रथम, केंद्र कबीलाई शासक वंश द्वारा नियंत्रित किया जाता था; दूसरे स्तर पर राज्यपाल थे जो विभिन्न जनजातीय समूहों की देखरेख करते थे और सेनाओं की कमान संभालते थे। संगठन के तीसरे स्तर पर विभिन्न समूहों के स्थानीय जनजातीय नेता थे। वे अपने जनजातीय समुदाय के नेता थे और कबीले के *खाकान* के आदेश के अनुसार अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते थे।

मध्य एशिया की खानाबदोश जनजातियों के बीच राज्य शक्ति चंगेज खान के समय से पूर्व तक कमज़ोर बनी रही। चंगेज खान ने स्टैप्स की खानाबदोश संरचना में कई नवीन तत्वों की शुरुआत की। कबीलों का राजनैतिक संगठन वंश-आधारित था जो खून के रिश्ते द्वारा अनेक परिवारों से संबंधित थे। राजनीतिक समूह के नेता के संबंध में कबीलों की सभा द्वारा निर्णय लिया जाता था, जिन्हें *कुरूलताई* रूप में जाना जाता था। *कुरूलताई* जनजातीय समूह के नेता की राजनीतिक स्थिति पर निर्णय लेती थी। *यासा* जनजातीय संगठनों द्वारा अपनाई गई कानून संहिता थी। *यासा* ने समाज के संचालन में मदद की और खानाबदोश साम्राज्य का कानूनी व्यवहार तय किया। खानाबदोश जनजातियां अपने मुखियाओं के नेतृत्व में जीवनयापन करती थीं और इन मुखियाओं के पास अपने जनजातीय लोगों पर नियंत्रण की अत्यधिक शक्तियां थीं। यह जनजातीय मुखिया एक सफल लड़ाई के बाद योद्धाओं के बीच लूट विभाजित करते थे। वे विवादों को भी सुलझाते थे, इस प्रकार वे न्यायाधीश का भी कार्य करते थे।

11.9 खानाबदोश समाज

खानाबदोश यूरेशियन समाज का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग थे। उन्होंने पशुधन-पालन की उच्च विकसित तकनीक, पशुओं की चराई, खानाबदोशों के स्थानांतरण और शिल्प और युद्ध के विभिन्न रूपों के साथ एक विशेष अर्थव्यवस्था की स्थापना की। उनकी, पशुधन के व्यक्तिगत स्वामित्व और चरागाहों के सामुदायिक स्वामित्व की दोहरी प्रणाली पर आधारित एक अद्वितीय और अत्यधिक विकसित सामाजिक संरचना थी। दो वजहों से खानाबदोश भ्रमणशील थेः पहला, स्वयं समाज की आंतरिक गतिशीलता, और दूसरा बाह्य गतिशीलता, तेजी से चलने और दूरदराज के क्षेत्रों में स्थानांतरण की क्षमता, शांतिपूर्ण और सैन्य दोनों ही कारणों से। जैसा कि पहले कहा गया है, खानाबदोश आमतौर पर नखलिस्तान के पास रहते थे, जहां बसे किसान शहरी जीवन व्यतीत करते थे। इस प्रकार, वहां उनके बीच आदान-प्रदान होता था, अर्थात, खानाबदोश और स्टैप्स के स्थायी बसे समाजों के बीच गठबंधन का यह रिश्ता जो कुछ स्थानों पर वैवाहिक संबंधों के रूप में भी था, जबकि अन्य स्थानों पर वे आपस में युद्ध में संलग्न थे। बारफील्ड (2001) द्वारा उनके संबंधों का अध्ययन किया गया है और उनका विचार है कि स्टैप्स के खानाबदोशों ने बसे हुए चीन के साम्राज्य के प्रति 'बाहय सीमा रणनीति (outer frontier strategy) को अपनाया। वह व्याख्या करते हैं :

> बाह्य सीमा रणनीति के तीन प्रमुख तत्व हैंः चीनी दरबार को डराने के लिए उग्र, बारी-बारी युद्ध और शांति की नीति द्वारा चीनी शासकों द्वारा प्रदत्त अनुदानों और विशेषाधिकार व्यापार की मात्रा में वृद्धि और जानबूझकर चीनी भूमि पर कब्जा करने से इंकार करना ताकि उसकी रक्षा करने के लिए उन्हें बाध्य न होना पड़े।
>
> **(बारफील्ड, 2001: 15)**।

इस रणनीति के जवाब में चीन के सम्राटों ने भी तीन नीतियों को अपनायाः

1) रक्षात्मक जवाब, सीमाओं की किलेबंदी करना और खानाबदोशों की मांगों की उपेक्षा करना;
2) आक्रामक तरीके से जवाब देना। अभियानों के लिए घुड़सवार सेना को तैयार करना और स्टैप्स के खानाबदोशों पर हमला; और
3) उदार शांति संधियों के साथ भेंटों द्वारा खानाबदोशों को प्रसन्न करना जो उन्हें अनुदान और सीमा-क्षेत्रों के बाजार तक पहुंच प्रदान करती थी। **बारफील्ड, 2001: 16**

इस प्रकार दोनों ने आदान-प्रदान के बंधन साझा किए, हालांकि यह सिर्फ अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के लिए था, लेकिन दोनों समुदाय एक दूसरे के साथ संबंधों में सुधार करने में व्यस्त रहे।

खानाबदोश समाज की प्राथमिक चिंता का विषय अपनी मवेशियों के लिए चरागाहों की खोज करना था। खानाबदोश समाज संप्रभुता, अधिकार-क्षेत्र पर नियंत्रण और संपत्ति अधिकार संबंधी विवाद, जिन्होंने स्थायी बसावट वाली सभ्यताओं के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, की समस्याओं से कभी परेशान नहीं हुआ, हालांकि खानाबदोश समाज में वहां शासक द्वारा निरंकुश शासन करने के लिए कोई प्रतिबंध नहीं था। निरंकुश शासन को केवल परंपरा और सामाजिक पदानुक्रम संबंधी कबीले की भावना और विद्रोह के डर की शक्ति से रोका जा सकता था।

खानाबदोश समूहों की सामाजिक संरचना

स्टैप्स समाज विभिन्न जनजातीय समूहों की घुमंतू संस्कृति पर आधारित था। प्रवास चक्र (migration cycle) खानाबदोश संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा था। जनजातीय समूहों में पशुओं और मानव समूहों की शक्ति के आधार पर असमानता थी। इन खानाबदोशों की सभी घरेलू जरूरतों को लकड़ी और चमड़े के द्वारा बनाया गया था। समाज में पुरूष और महिला दोनों एक बराबर जिम्मेदारियां साझा करते थे।

> पुरुष की जिम्मेदारियों में पशु चराई के साथ धनुष और तीर और अन्य उपकरण बनाना शामिल था। बाकी समय में वह शिकार, तीरंदाजी और सैन्य अभियान के साथ खुद को व्यस्त रखते थे। अन्य सभी श्रम महिलाओं की जिम्मेदारी थी – घर का काम, दूध निकालना और पशुओं से अन्य उत्पादों को तैयार करना और बच्चों की परवरिश। जब पुरुष अनुपस्थित होते थे तो महिलाओं को पूरा बोझ झेलना पड़ता था।
>
> **क्रेदिन, 2018: 2**

सीथियन समाज में महिलाओं और पुरुषों को समान रूप से महत्वपूर्ण समझा गया। सीथियन समाज में कई महान् महिला प्रमुख भी शामिल थीं जिन्होंने राजनीतिक मामलों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उदाहरण के लिए, 530 बी सी ई में ईरानियों ने मसागेताई सीथियनों के क्षेत्र पर साइरस[15] के नेतृत्व में हमला कर दिया। इस युद्ध में साइरस ने सीथियनों को पराजित किया और साइरस ने सीथियनों के सैन्य सेनापति स्पारगेपाइसेस को मार डाला। इस अवसर पर सीथियन रानी टोमीरिस, ने सेना की कमान संभाली और अपने बेटे स्पारगेपाइसेस की मौत का ईरानियों से बदला लिया। प्राचीन काल की सबसे प्रसिद्ध अत्यंत भयानक कहानियों में से एक में, टोमीरिस ने ईरानी राजा साइरस महान् के सिर काटने और उसके खून से शराब पात्र को भरकर, उसमें रखने का आदेश दिया। टोमीरिस की बहादुरी और दृढ़ इरादों की आज भी अत्यधिक सराहना की जाती है। उसकी लोकप्रियता के सबूत के रूप में महिलाओं का नाम टोमीरिस रखना राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में कज़ाकिस्तान में आम है (देखें रेखाचित्र https://www.wga.hu/html_m/p/preti/tomyris.html जिसमें सीथियन रानी द्वारा ईरान के राजा साइरस के सिर को प्राप्त करते हुए दिखाया गया है)।

[15] साइरस एक महान् राजा था और अकामिनिड साम्राज्य (550 बी सी ई) का संस्थापक था। यह पहला ईरानी साम्राज्य था जिसमें वर्तमान बुल्गारिया, रोमानिया और यूक्रेन के क्षेत्र शामिल थे।

सीथियनों में अपने मृतकों को उनके सामानों के साथ दफन करने की परंपरा थी। *कुरगना* कब्रें सीथियनों की जीवन-शैली पर प्रकाश डालती हैं। *कुरगना* कब्र में पाए जाने वाले सामान से मृतक की सामाजिक स्थिति के बारे में संकेत मिलता है। सीथियन राजा, *इसिक माउंड,* को अपनी लंबी तलवार, एक छोटी कटार, मिट्टी के जार, मांस के साथ लकड़ी की प्लेट और सोने और चांदी के कीमती कटोरों, जो निर्विवाद रूप से उनके धन को दर्शाता है, के साथ दफनाया गया था। अन्य सीथियन कब्रों में अधिक साधारण वस्तुएं थीं जो मृत पुरुषों के साथ दफनाई जाती थीं। यह इंगित करता है कि सीथियन समाज के भीतर सामाजिक स्तरीकरण था।

हूण समाज की अपनी प्रथागत कानूनी प्रणाली थी इसके अनुसार तलवार खींचने पर मौत की सजा थी और चोरी करने पर न केवल चोर की संपत्ति बल्कि उसके संपूर्ण परिवार की संपत्ति को भी जब्त कर उसे दंडित किया जाता था। छोटे अपराधों के लिए चेहरे को काट कर दंडित किया जाता था। हूण समाज आद्य-सामंती (proto-feudal) के रूप में जाना जा सकता है। जैसा कि एक सामंती समाज में देश की भू-जागीरें साम्राज्य के सामंती सरदारों को वंशानुगत आधार पर प्राप्त होती थीं, वहीं हूण समाज में लोगों को जागीर की तरह दिया जाता था। जैसे-जैसे हूणों ने अधिक से अधिक क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की विजित राज्यों के शाही घरों के सदस्यों को भी हूण साम्राज्य के लोगों को, जो उन्हें शासन करने में मदद करते थे, दे दिया जाता था। विदेशी बंदी अक्सर दास बनाए जाते थे और वे रोमन दास व्यापारियों को बेच दिए जाते थे। हूण, हूण दास नहीं रखते थे। एक हूण परिवार के स्वामित्व में एक दास के साथ अक्सर अच्छा व्यवहार किया जाता था। उन्हें अपनी स्वतंत्रता खरीदने अथवा लड़ाई में उनके स्वामी की ओर से लड़ने के बदले में अपनी स्वतंत्रता अर्जित करने की अनुमति दी जाती थी। शिकार और तीरंदाजी ने हूणों के दैनिक जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाई। वे सक्रिय रूप से बचपन से ही शिकार पर जाने के लिए अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते थे। हूण महिलाएं न केवल घुड़सवारी करने में निपुण थीं, बल्कि वे निपुण तीरंदाज थीं, धनुष, विशेषकर तीर और कमान के प्रयोग में। वे दुश्मन के हमलों से बच्चों और बूढ़े लोगों के बचाव में अपने पतियों की मदद करती थीं। तालास किले की दीवार पर (36 बी सी ई) पुरुषों के साथ मिलकर वे बहादुरी से रोमन और चीनी सैनिकों के विरूद्ध लड़ीं और सबसे बाद में उन्होंने अपनी चौकी को छोड़ा। रक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और बच्चों के प्रशिक्षण में धनुष और तीर को संभालने की शिक्षा देना स्पष्ट रूप से जीवन की आवश्यकताओं की ओर संकेत करता है। इसने खानाबदोश हूण की, जो संख्या में छोटे समूह थे, अपनी स्वतंत्रता की रक्षा में मदद की। हूण सूरज, चांद और अन्य खगोलीय पिंडों की पूजा करते थे और आकाश, पृथ्वी, आत्मा और अपने पूर्वजों को बलि प्रदान करते थे (हरमट्टा, 1994: 159-160)।

तुर्की समाज में सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर समाज के भीतर भेदभाव और पदानुक्रम था। स्टैप्स के खानाबदोश समाज अब धन के आधार पर विभाजित थे। तुर्की शिलालेख में अमीर व्यक्तियों *(Bays)* को गरीब लोगों *(Cygay)* के विपरीत श्रेष्ठतर दर्शाया गया है। गरीब पुरुषों को दयनीय, तुच्छ और दीन-हीन रूप में वर्णित किया गया है। हालांकि, 'तुर्कों का प्रमुख धन और सबसे आकांक्षित लूट पशुधन, विशेष रूप से घोड़ों के झुंड, थे। आम सैनिकों के दफन टीले उच्च जाति के दफन क्षेत्रों की तुलना में तुच्छ थे।

गरीब किसानों की कब्र में लेकिन न तो महंगे हथियारों और न ही घोड़ों को पाया जा सकता है। गरीब खानाबदोश जिन्होंने अपने पशुओं को खो दिया था, सर्दियों की तिमाहियों में छोटी स्थाई बस्तियों (*बालिक़*) में बस गए जहां वे आदिम कृषि करते थे। वह मुख्य रूप से बाजरा उगाते थे और छोटे किलों (*क़ुर्गन* या *क़ूर्गन*) का निर्माण करते थे, जिसमें उनके अनाज का संग्रहण किया जाता था। चाहे किसी भी प्रकार के संघर्ष ने, अमीर और गरीब, बेग और जन साधारण के बीच, कैसी भी खटास पैदा की हो, एक समग्र रूप में यह समुदाय दूसरे क्षेत्र की जनसंख्या से काफी अलग था। जो दास (*कुल कुन,* पुरुष और महिला दास) थे और *एर्स* पर निर्भर थे उनको कोई अधिकार नहीं थे और वे प्राचीन तुर्क समाज की परिधि पर स्थित थे।

हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन ऑफ सेंट्रल एशिया, भाग III : 331

मंगोलों के जनजातीय समाज को *उलूस* के रूप में जाना जाता था। इस समाज में पशुधन पर कब्जे की संख्या के आधार पर जनजातीय सदस्यों को दर्जा हासिल होता था। ***नोयन*** खानाबदोश समाज के जनजातीय समूह के मुखिया होते थे। वह खानाबदोश साम्राज्य के सम्राट – *खान/खाकान* के सलाहकार थे। उनका मुख्य कार्य छापों और युद्धों के दौरान कबीले और सैन्य नेताओं के प्रवासी स्थानांतरण को भी नियंत्रित करना था। वह जनजाति के सैन्य अभिमानों के आयोजक थे। *अरात* जनजातीय समूहों के भीतर एक और चरवाहा समूह था जो अपेक्षाकृत छोटे झुंडों के स्वामी थे और समूह के नेता से चरागाह प्राप्त करते थे। वह *खान* और *नोयन* को बारी-बारी से अपनी सेवाएं प्रदान करते थे। निचले स्तर पर एक अन्य समूह *बोगोल* था जो संभवतः *नोयन* और *अरात* से संबंधित थे। वे समूह के नेताओं के लिए काम करते थे। चरावाही बड़े पैमाने पर बच्चों और किशारों द्वारा की जाती थी। महिलाएं *युर्त* में दूध, ऊन और मांस आदि तैयार करती थीं। गोबी रेगिस्तान में ऊंट की ज़्यादा देखभाल की जरूरत नहीं थी, हालांकि घोड़ों के लिए चराई के मैदान आवश्यक थे।

11.10 खानाबदोश कला

खानाबदोश समूहों के बीच जातीय और भाषाई मतभेदों के बावजूद स्टैप्स जीवनशैली समस्त खानाबदोश संस्कृतियों और क्षेत्रों में काफी समान थी। भाषाई अंतर के आधार पर मध्य एशिया के स्टैप्स क्षेत्र के खानाबदोशों को तीन मुख्य भाषाई समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः भारतीय-यूरोपीय[16], तुर्क[17], और मंगोल[18]। खानाबदोश जनजातियां 20 से अधिक सदियों तक मध्य एशिया में सक्रिय रहीं। उन्हें मध्य एशिया के बसे लोगों द्वारा बर्बर कहा जाता था क्योंकि जिन वस्तुओं की उन्हें जरूरत होती थी उन्हें लूटने के लिए वे स्थायी बसे लोगों पर हमला करते थे। इन खानाबदोश लोगों की कलात्मक संस्कृति स्थायी बसी सभ्यताओं के प्रभाव के तहत विकसित हुई। यह खानाबदोश, जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण करते रहे, कांस्य, चांदी और सोने की कलाकृतियां अपने पीछे छोड़ गए। उनकी कला ने पोशाक, उपकरणों के अलंकरण, पट्टा फलक (plaque), घोड़ों के साज-समान (harness) तलवारों के पट्टे और बकसुये, वैगन के चौखटे, हत्थे, तलवार की म्यान और कालीनों पर ध्यान केंद्रित किया।

खानाबदोश जनजातियों की संस्कृति सीथियनों के साथ शुरू हुई, जो कि पहली खानाबदोश जनजाति थी जिसने खानाबदोश साम्राज्य स्थापित किया। सीथियन खानाबदोशों ने कई सांस्कृतिक पहलुओं को खानाबदोश कला में प्रस्तुत किया। सीथियन लड़ाई में कुल्हाड़ी, भाले और तलवारें प्रयोग करते थे। सीथियनों ने धनुष और तीर के प्रयोग की शुरुआत भी की। उनके धनुष हड्डी, पत्थर और कांस्य के बने होते थे। सीथियन पशु कला के रचनाकार भी थे। पशु कला सभी खानाबदोश जनजातियों के बीच सीथियनों के समय से काफी विकसित हुई। इसका यह भी कारण था कि यह खानाबदोश समूह शिकारी और संग्रहकर्ता थे। सीथियन कला ने असीरिसन[19] प्राकृतिक कला को प्रभावित किया। इस प्रकार सीथियन पशुकला को असीरियन प्रकृतिवाद के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। असीरियन कला, राजाओं के महलों की दीवारों पर फली-फूली, लेकिन सीथियनों ने सजावटी पशु मूर्तियों को बनाने के लिए सोने का इस्तेमाल किया। इस प्रकार असीरियन कला के विपरीत सीथियन कला

[16] इस भाषा को शुरूआती दौर में बोलने वाले लोग कॉकेशस और रूस के यूक्रेन और पड़ोसी क्षेत्रों के आस-पास बसे थे। सिमेरियन, सीथियन और सरमातियनों ने भारतीय-यूरोपीय भाषा का प्रयोग किया।

[17] तुर्की संस्कृति और भाषा वर्तमान साइबेरिया में ऊपरी एनीसी नदी के आसपास पांचवी शताब्दी बी सी ई में शुरू हुई थी।

[18] मंगोल भाषी जनजातियां मंगोलिया और मंचूरिया से थीं और उन्होंने उत्तरी स्टैप्स क्षेत्र की ओर विस्तार किया।

[19] असीरियन साम्राज्य मेसोपोटामिया का राज्य था जिसने जानवरों और प्रकृति का उपयोग अपनी कला में 1500 बी सी ई में शुरू किया।

खानाबदोश जनजाति की संस्कृति थी। हालांकि उनकी कलाकृतियों की विषय-वस्तु जानवरों या पक्षियों के चित्र थे, लेकिन उन्होंने उन्हें कहीं अधिक उत्कृष्ट रूप से सजाया। सीथियनों ने अपने गहने और आभूषण तैयार करने के लिए सोने का प्रयोग किया। मध्य एशिया की सभी खानाबदोश कलाओं की विषय-वस्तु पक्षी और पशु बने रहे। पहली सीथियन कलाकृति, कूबन के कलेर्मेस से प्राप्त लोहे और सोने की कुल्हाड़ी (छठी शताब्दी के आसपास की) है, जो पुरानी असीरो-बेबीलोन और लूरिस्तानियन विषय को प्रदर्शित करती है, जिसमें दो साकिन (ibexes) जीवन के पेड़ के आगे खड़े हैं। 'पशुओं को एक यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया गया है और कला स्पष्ट रूप से असीरियन पशु कला से प्रेरित है'। सीथियन कला इससे शुरू हुई, जिसे 'असीरियन (या यूनानी) प्रकृतिवाद से अलंकरण के बदलाव के रूप में परिभाषित कर सकते हैं' (ग्रोसे, 1970: 11-12)। सीथियन कला, कोस्त्रोम्स्काया कब्र से प्राप्त स्वर्ण हिरण के साथ अपने विशिष्ट रूप में प्रकट होती है। खानाबदोश कला में प्रकृतिवादी स्पर्श और अलंकरण शैली दोनों अद्वितीय थे। पशु शैली के यथार्थवाद को उनकी कला में चित्रित किया गया है।

चित्र 11.3 : तेंदुए के साथ सोने की सीथियन पट्टिका, सातवीं शताब्दी बी सी ई के अंत में
साभार: साईल्को, 2011

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/d3/Placca_pantera%2C_da_regione_di_drasnodar%2C_kurgan_chertomlyk%2C_oro_a_sbalzo_e_cesellato%2C_fine_VII-sec_ac…JPG

त्यानशान में नरीन (खिरगिजिया) की खुदाई में सीथियनों के अलग तरह के बाणों की नोकें और मिट्टी के गोलाकार बर्तन मिलते हैं, जो उनकी खानाबदोशी सांस्कृतिक शैली को दर्शाता है। सीथियनों द्वारा प्रयुक्त कांस्य के हथियारों को पूर्वी यूरोप (चेर्तोम लिक) से बाइकाल झील और मंचूरिया की सीमा में भी पाया गया है।

हूण कला के मुख्य स्थल बाइकाल झील क्षेत्रों के होपेइ, शांसी और शेंसी के सीमांत क्षेत्रों में पाए गए हैं जो हूण संस्कृति पर विशेष प्रकाश डालते हैं:

1) चीन की झील के उत्तर स्थल पर त्रास्बैकालिया (दूसरी से तीसरी सदी बी सी ई) में कब्रें हैं जहां 118 बी सी ई के बाद जारी चीनी हान सिक्के पाए गए हैं।

2) बाहरी मंगोलिया में ऊर्गा के पास नोइन उला में हूण राज्य के राजकुमार की एक कब्र पाई गई है जो संभवतः दूसरी शताब्दी की है। कब्र में स्टैप्स कला की कांस्य कलाकृतियां, एक ही तरीके से सजे हुए शानदार ऊनी कपड़े (एक ग्रिफिन बारहसिंघा से लड़ते हुए; शेर एक याक पर हमला करते हुए) आदि पाए गए हैं।

हूण कला की कई विशेषताएं हैं और बेल्ट फलक (plaques) या अन्य प्रकार के फलक, मांउट, हुक और कांसे के बने कुंदे (stud) और 'जानवरों के शैलीगत रूपांकन (motif), अथवा हिरणों के झुंडों को लाठी के सिरे को घुमाकर उन्हें मारने के चित्रण का प्रतिनिधित्व करती हैं'। इस कला को *ऑर्डोस* कला के रूप में जाना जाता है जिसका नाम मंगोल ऑर्डोस जनजाति के नाम पर पड़ा जो 16वीं सदी में शेंसी के उत्तर में पीली नदी के परिपथ पर बसी थी, इस क्षेत्र से विशेष रूप से भरपूर मात्रा में पुरातात्विक अवशेष मिलते हैं' (ग्रोसे, 1970: 24)। ऑर्डोस कला स्टैप्स की शैलीगत पशु कला की एक शाखा थी और उसकी फलकों (plaques) को युद्धरत घोड़ों, हिरन और बाघ, भालू तथा शानदार जानवरों के साथ लड़ाई करते हुए घोड़े अथवा हिरणों से अलंकृत किया गया है।

स्टैप्स के खानाबदोश समूहों में तुर्क कई स्मारकों को बनाने के लिए जाने जाते थे। उनके सबसे विख्यात स्मारकों में से एक है 'पत्थर के आदमी' की मूर्ति। यह 'पत्थर के आदमी' का स्मारक एक तुर्की योद्धा का है जो एक लंबा कोट पहने खड़ा है, जो एक हाथ में आग से भरा कप पकड़े है तथा दूसरे हाथ से एक चाकू के हत्थे को पकड़े हैं। यह दर्शाता है कि पशु और प्राकृतिक कला जो सीथियनों और हूण कला से विकसित हुई, तुर्कों के समय में बदल गई। अब ये इन खानाबदोश जानवरों और प्रकृति के स्थान पर अपने योद्धा सैनिकों को महत्व देने लगे। 'पत्थर के आदमी' की कलाकृति के साथ तुर्की सरदारों की कब्रें भी मंगोलियाई क्षेत्र के कुछ हिस्सों में पाई जाती हैं। इन शवाधान स्थलों में मूर्तियों के साथ तुर्की शिलालेख भी अंकित थे जो मृत व्यक्ति के बारे में प्रकाश डालते हैं। ये शवाधान स्थल, भवनों और मूर्तियों के साथ बड़े परिसरों में योजित किए गए थे।

अन्य खानाबदोश समूहों की तरह मंगोलो ने स्थायी बसे हुए लोगों की कला को अपनाया और सराहना की। सभी मंगोल शासकों (*खान*) ने स्थायी बसे लोगों की कला को अपनया और संरक्षण प्रदान किया। मंगोलों में घर की हर वस्तु को, अपने *गेर* के अंदर और पशुओं के बाडे को सजाने की प्रवृत्ति थी। मंगोल राजधानी कराखरम को चंगेज के बेटे उगुदेइ ने बसाया और अलंकृत किया। मंगोलो को संगीत से प्यार था, संगीत में उन्होंने एक अनूठी गायन शैली विकसित की थी जो गले से गायन या *खूमि* के नाम से जानी जाती है।

बोध प्रश्न-3

1) मध्य एशिया के खानाबदोशों की राजनीतिक संरचना का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सीथियनों और हूणों की सामाजिक संरचना पर पांच पंक्तियां लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) मध्य एशिया की खानाबदोश कला की मुख्य विशेषताएं बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

11.11 सारांश

जहां खानाबदोश साम्राज्यों ने कई शताब्दियों तक स्थायी बसे समाजों पर शासन किया, वहीं खानाबदोश कभी नहीं बदले और उन्होंने स्थायी बसे समूहों के तरीकों को भी नहीं अपनाया। लड़ने के लिए खानाबदोशों ने हमेशा धनुष के उपयोग को प्राथमिकता दी। उदाहरण के लिए, जब स्थायी बसी संस्कृतियों के लोगों ने आधुनिक प्रौद्योगिकियों की दिशा में प्रगति कर ली थी तब भी खानाबदोशों ने लड़ने के लिए धनुष का उपयोग जारी रखा। खानाबदोशों की शस्त्र संबंधी कमज़ोरी ने स्थायी बसे समूहों को समय के साथ उन्हें वश में करने का अवसर प्रदान किया। खानाबदोश जीवनशैली में उनकी दृढ़ता और अटल विश्वास का तैमूर जैसा योद्धा, जो तुर्क-मंगोल विजेता और अंतिम खानाबदोश नेताओं में था तथा जिसने भारत और मध्य एशिया में विशाल तिमुरिद साम्राज्य स्थापित करने के बाद भी खानाबदोश जीवनशैली का समर्थन जारी रखा। यह उसकी जीवनशैली से भी प्रदर्शित होता है। हालांकि उनका खानाबदोश जीवन का यह समर्थन, दुनिया को जीतने के अपने सैन्य दृष्टिकोण पर आधारित था क्योंकि एक खानाबदोश की तरह की जिंदगी एक योद्धा के लिए उपयुक्त थी, जो हमेशा लड़ाई के लिए तत्पर रहते थे।

11.12 शब्दावली

बद्दू : खानाबदोश अरबी लोगों का एक समूह है जो उत्तरी अफ्रीका के अरब प्रायद्वीप इराक और लेवांट के रेगिस्तानी क्षेत्रों में बसे हुए थे।

नोयन : *नोयन* मंगोल साम्राज्य में सरदारों की एक उपाधि थी और जिसे बाद में सत्ता के पद के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा।

रकाब : छल्ला या *रकाब* जो घुड़सवार को पैर की बेहतर पकड़ बनाने में सहायता देती है, जो एक बैल्ट द्वारा काठी से जुड़ी होती थी।

युर्त : गोलाकार टैंट जो मध्य एशिया के खानाबदोश लोग अपने रहने के लिए प्रयोग करते थे।

11.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) अधिक जानकारी के लिए भाग 11.3 देखें

2) खानाबदोश जीवन की व्याख्या करें और पशुचारी खानाबदोश जीवन को व्याख्यायित करें। अंतर के लिए भाग 11.2 देखें

3) भाग 11.4 और 11.5 देखें

4) भाग 11.5 देखें। मध्य एशिया में खानाबदोश साम्राज्य की स्थापना के कारणों की व्याख्या करें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 11.6 देखें

2) उप-भाग 11.7.1 देखें

3) उप-भाग 11.7.3 देखें

4) अधिक जानकारी के लिए भाग 11.7 देखें

5) उप-भाग 11.7.6 देखें

बोध प्रश्न-3

1) भाग 11.8 देखें। स्टैप्स के शक्तिशाली खानाबदोश समूहों द्वारा एक सुसंगठित राजनीतिक व्यवस्था का गठन किया गया था।

2) भाग 11.9 देखें

3) भाग 11.10 देखें

11.14 संदर्भ ग्रंथ

एडले, चहरयार. हवीब, इरफान. एवं बाडपाकर, कार एम. 2008. *हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन ऑफ सेन्ट्रल एशिया: डेवलपमेंट इन कॉन्ट्रास्ट फ्राम द सिक्सटींथ टू द मिड-नाइनटीथ सेंचुरी.* भाग V. मल्टीपल हिस्ट्री सीरीज. पेरिसः यूनेस्को.

एडशीड, एस. ए. एम. 1993. *सेन्ट्रल एशिया इन वर्ल्ड हिस्ट्री.* लंदनः पालग्रेव मैकमिलन.

आसीमांव, एम. एस. एवं बॉसवर्थ, क्लिफ्रोर्ड एडमंड. 1999. *हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन्स ऑफ सेन्ट्रल एशिया.* भाग IV. मल्टीपल हिस्ट्री सीरीज. पेरिसः यूनेस्को.

बारफील्ड, थॉमस जे. 2001. 'द शेडो एम्पायर्स : इम्पीरियल स्टेट फार्मेशन अलॉन्ग द चाइनीज-नोमेड फ्रांटियर'. *एम्पायर.* संपादित, सुसान ई अल्कॉक. टेरेंस एन. डी. अल्ट्रॉय, कैशलीन डी. मॉरिसन. एवं कार्ला एम. सिनोपोली. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस.

बेकविथ, क्रिस्टोफर आई. 2011. *एम्पायरस ऑफ द सिल्क रोड.* प्रिसटन यूनिवर्सिटी प्रैस. यूनाईटेड किंगडम.

चालिआंड, जेरार्ड. 1934. *नोमोडिक एम्पायर्स फ्रॉम मंगोलिया टू द डेन्यूब.* अनुवाद ए. एम. बैरैट (2004). यू.एस.ए.: ट्रांसेक्सन पब्लिसर्स.

दानी, ए. एच. 1993. संपा. *हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन ऑफ सेन्ट्रल एशिया : द डॉन आफ सिविलाइजेशनः अर्लिएस्ट टाइम्स टू 700 बी. सी.* भाग I, पेरिसः यूनेस्को.

गोल्डन, पीटर बी. 2011. *सेन्ट्रल एशिया इन वर्ल्ड हिस्ट्री.* न्यूयार्कः ऑक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (ओ यू पी).

ग्रोसे, रेने. 1970. *द एम्पायर्स आफ द स्टेपीजः ए हिस्ट्री आफ सेन्ट्रल एशिया.* न्यू ब्रंशविक, न्यू जर्सीः रूटगर्स यूनिवर्सिटी प्रैस.

हरमट्टा, जेनोस. 1994. *हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन्स ऑफ सेन्ट्रल एशिया.* भाग II. *700 बी सी टू ए. डी. 250.* पेरिसः मल्टीपल हिस्ट्री सीरीज, यूनेस्को.

हेम्बली, गेविन. 1969. *सेन्ट्रल एशिया,* डेलाकोर्ट प्रैस. लंदनः वीडनफेल्ड एंड निकोलसस लिमिटेड.

हेरोडोटस. 1920. *द हिस्ट्रीज.* इंगलिश अनुवाद ए. डी. गोडेले. कैम्ब्रिजः हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस.

हिट्टी, फिलिप के. 1937. *हिस्ट्री ऑफ द अरब्सः फ्रॉम द अर्लिएस्ट टाइम्स टू द प्रेजेंट.* न्यूयार्कः पालग्रेव मैकमिलन.

खजानोव, अनातोली एम. 1994. *नोमैड्स एंड द आउटसाइड वर्ल्ड.* विस्कोन्सिनः द यूनिवर्सिटी विस्कोन्सिन प्रैस.

खजानोव, अनातोली एम. 2003. 'नोमैडस ऑफ द यूरेशियन स्टेपीज इन हिस्ट्रोकिरल रेस्ट्रोस्पेक्टिव'. *नौमैडिक पाथवेज इन सोशल इवोल्यूशन.* सेन्टर ऑफ सिविलाइजेशन एंड रीजनल स्टडीज ऑफ द रशियन. मॉस्कोः एकेडमी ऑफ साइंसेज.

क्रोदिन, निकोलाई एन. 'नोमैडिज्म, इवोव्यूशन एण्ड वर्ल्ड सिस्टमः पेस्टोरल सोसाइटीज इन थ्योरीज ऑफ हिस्ट्रोरिकल डेवलपमेंट'. *जर्नल ऑफ वर्ल्ड-सिस्टम रिसर्च.* भाग 8, नं. 3.

क्रोदिन, निकोलाई एन. 2003. *नोमैडिक पाथवेज इन सोशल इवोल्यूशन,* सेंटर फॉर सिविलाइजेशन एंड रीजनल स्टडीज ऑफ द एशिया. मॉस्कोः एकेडमी ऑफ साइंसिज प्रैस.

क्रोदिन, निकोलाई एन. 2010. *नोमैड्स इन इनर एशिया ट्रांजिशन.* मॉस्कोः यू आर एस एस.

क्रोदिन, निकोलाई एन. 2015. 'नोमौडिक एम्पायर इन इनर एशिया'. *कॉम्प्लैक्सिटी आफ इंटरैक्शन अलॉग द यूरेशियन स्टेप जोन इन द फर्स्ट मिलेनियम* ए. डी. भाग 7. संपा. जॉन बेमन. माइकेल सहमांदर. बॉन कंट्रिब्यूशन्स टू एशियन आर्कियोलॉजी.

क्रोदिन, निकोलाई एन. 2018. 'एनसियट स्टेप नोमैड सोसाइटीज'. *ऑक्सफोर्ड रिसर्च एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एशियन हिस्ट्री.* यू. एस. ए.: ओ यू पी.

लिटविंस्की, बी. ए. 1994. *हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन्स ऑफ सेंट्रल एशियाः 250 टू 750 ए. डी.* भाग III. पेरिसः मल्टीपल हिस्ट्री सीरीज, यूनेस्को.

मैकगवर्न, विलियम मॉन्टगोमरी. 1939. *द अर्ली एम्पायर्स ऑफ सेंट्रल एशियाः ए स्टडी ऑफ सीथियंस एंड द हूण्स एंड द पार्ट दे प्लेड इन वर्ल्ड हिस्ट्री, विद स्पेशल रिफरेंस टू द चाइनीज सोर्सिज.* द यूनिवर्सिटी आफ नार्थ कैरोलिना प्रैस.

रौदिक, पीटर. 2007. *द हिस्ट्री आफ द सेंट्रल एशिया.* लंदनः ग्रीनवुड प्रैस.

सांकृत्यायन, महापंडित राहुल. 1964. *हिस्ट्री ऑफ सेंट्रल एशिया, ब्रॉंज़ी (200 बी सी) टू चंगेज खान (1227 ए. डी.).* कलकत्ताः न्यू ऐज पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड.

सिनोर, डेनिस. (संपा.) 2008. *द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ अर्ली इनर एशिया.* यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिकाः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस.

तमर, टी. इ. राइस. 1957. *एनशियंट पीपुल एंड प्लेसेजः द सीथियंस.* (सपां.) डॉ गियान डेनियल. लंदनः फ्रेडरिक ए प्रेइजर.

जिमोन्थी, इस्तवन एवं ओस्मान कारताय. 2016. *सेंट्रल यूरेशिया इन द मिडिल एजिज़.* ब्रीसबेदनः हरासोविट्ज वेरलग.

11.15 शैक्षणिक वीडियो

हॉर्स लॉर्डः ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ द सीथियन्स
https://www.youtube.com/watch?v=IAxEtT3Ifa

ट्रेडीश्नल नालेज एंड स्किल्स इन मेकिंग किरगिज एंड कज़ाख युर्तसः यूनेस्को
https://www.youtube.com/watch?v=5fvjX90MfSw

हू आर द टर्क्स?
https://15minutehistory.org/2013/11/13/episode-31-who-are-the-turks

बायोग्राफी आफ गैंगीज़ खान
https://www.youtube.com/watch?v=2UCF-X73y-w

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

244 Blank

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY